www.thearyasamaj.org

ओ३म्

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास मार्गशीर्ष–पौष, संवत् 2070
दिसम्बर 2013

अंक 101, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

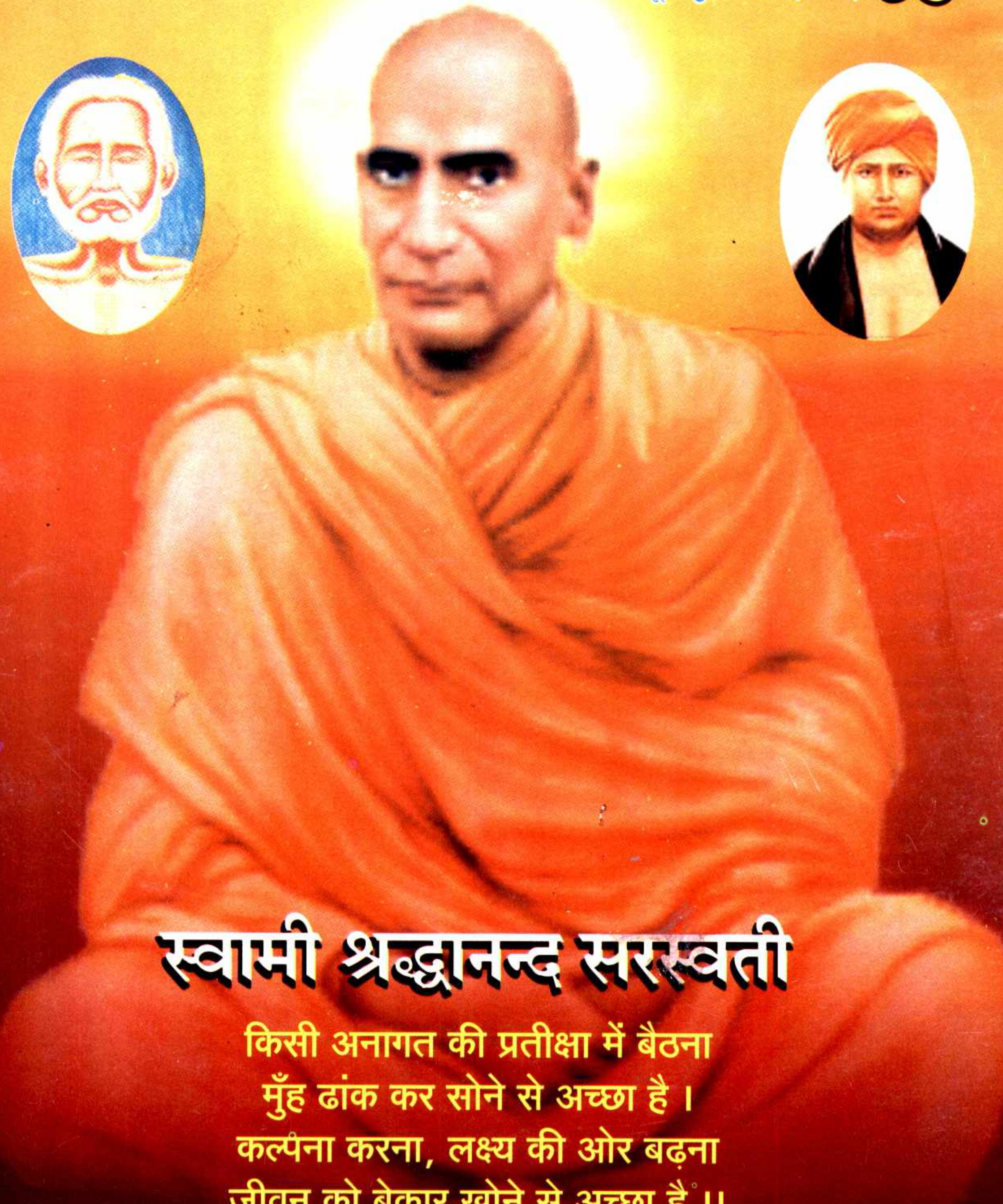

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

किसी अनागत की प्रतीक्षा में बैठना
मुँह ढांक कर सोने से अच्छा है ।
कल्पना करना, लक्ष्य की ओर बढ़ना
जीवन को बेकार खोने से अच्छा है ।।

www.thearyasamaj.org

आर्यवीर दल शिविर लेन्जाखार (कवर्धा) की झलकियाँ

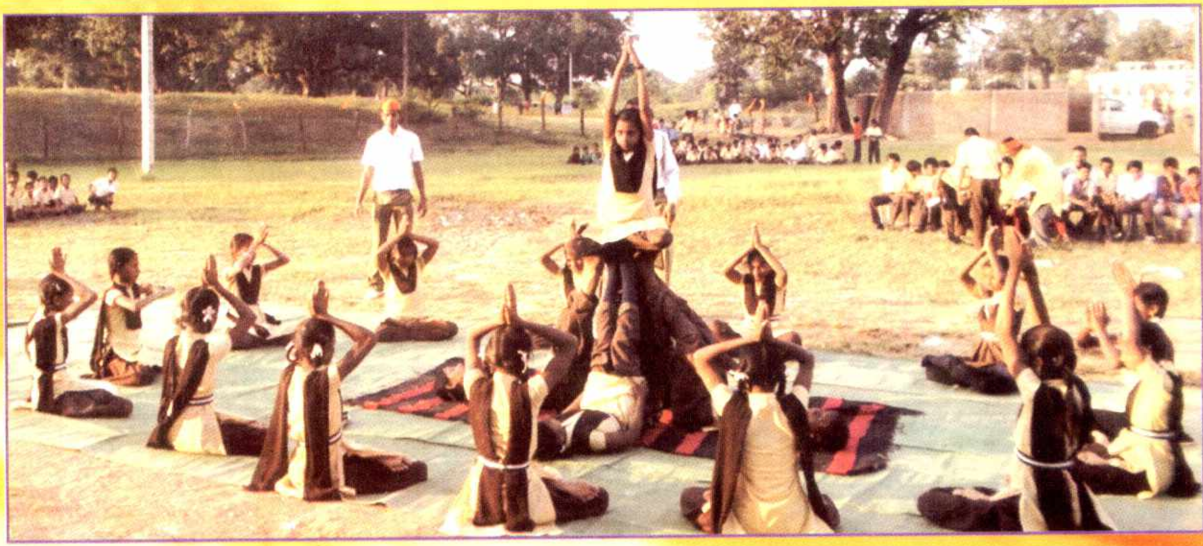

www.thearyasamaj.org

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - २०७०
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११४
दयानन्दाब्द - १९०

वर्ष - ०९, अंक ६ | ओ३म् | मास/सन् - दिसम्बर २०१३

श्रुतिप्रणीत–सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त–दीप्त वेद–सारभूतनिश्चयं।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सद्मसद्मकम्,
सभाग्निदूत–पत्रिकेयमादधातु मानसे।।

विषय - सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	वेदामृत : आओ, सुधी बनें	स्व. डॉ. रामनाथ वेदालङ्कार	०४
२.	सम्पादकीय : आज देश को स्वामी श्रद्धानन्द जैसा नेता चाहिए.	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	अंधविश्वास के मकड़जाल में भटकता मानव	श्री अर्जुनदेव चड्ढा	०७
४.	ईश्वर की महती कृपा ज्ञानपूर्वक आराधना से ही प्राप्त होगी	कन्हैयालाल आर्य	०९
५.	यह नाराजगी किस पर और क्यों ?	श्री ओमप्रकाश बजाज	११
६.	स्वामी श्रद्धानन्द की दूरदर्शिता के सुपरिणाम	ले. मनुदेव 'अभय'	१२
७.	बलात्कार के कारण व निवारण	आचार्य विश्वामित्र	१५
८.	नर-देह से व्योम्-देह तक की यात्रा	महात्मा चैतन्यमुनि	१७
९.	सराहनीय कदम : दिल्ली आर्य प्रति. सभा	साभार	२०
१०.	"देश के चार महान् राजनीतिज्ञ"	श्री खुशहालचन्द्र आर्य	२१
११.	करुणामूर्ति दयानन्द	प्रोफे. मोनिका आर्या	२३
१२.	पुण्य स्मरण : पं. काशीनाथ शास्त्री	डॉ. अशोक आर्य	२६
१३.	स्वाभिमान : "गब्बर"	श्री देवन्द्र कुमार मिश्रा	२७
१४.	स्वास्थ्य चर्चा : उदर वायु-उदर रोग	श्री दीनानाथ वर्मा	२८
१९.	होमियोपैथी से सर्दी नजला का उपचार	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	२९
२०.	समाचार दर्पण		३०

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ८८२७७५०४७८)

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री अवनीभूषण पुरंग
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. ९८९३०६३९६०)

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३००८०१२५७

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

कार्यकारी सम्पादक
आचार्य धनञ्जयशास्त्री 'जातवेदाः'
मो. ९०३९६९९२१९

पेज सज्जक : श्रीनारायण कौशिक
प्रबधंक : श्री रामेश्वर प्रसाद यादव

- कार्यालय पता -
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८)२३२२२२५, ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का परिवर्त्तित अणुसंकेत (ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

वार्षिक शुल्क - १००/- दसवर्षीय-८००/-

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा पायोनियर प्रिन्टर्स, ओमपरिसर, आर्यनगर, दुर्ग से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया।

www.thearyasamaj.org

वेद वेदामृत

आओ, सुधी बनें

वेद वेदामृत

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

एतो न्वद्य सुध्यो भवाम, प्र दुच्छुना मिनवाम वरीयः।
आरे द्वेषांसि सनुतर्दधाम, अयाम प्राञ्चो यजमानमच्छ॥ ऋग्. ५,४५,५

ऋषिः **सदापुः आत्रेयः**। देवता **विश्वेदेवाः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● **(आ इत)** आओ, **(नु)** निश्चय ही **(अद्य)** आज **(सुध्यः)** सुधी-सुमति और सुकर्मा **(भवाम)** होवें, **(दुच्छुनाः)** दुर्गतियों को **(वरीयः)** आत्यन्तिक रूप से **(प्र मिनवाम)** प्रनष्ट कर दें, **(सनुतः)** छिपे हुए **(द्वेषांसि)** द्वेषभावों को **(आरे)** दूर **(दधाम)** रख दें, **(प्राञ्च)** प्रगतिशील (हम) **(यजमानम् अच्छ)** यजमान के प्रति **(अयाम)** जायें।

● **आ।** ओ! आज हम सुधी बनें, सुविचारशील और सुकर्मा बनें। विचार और कर्मों का परस्पर बड़ा सम्बन्ध हैं, जैसे विचार होते हैं, वैसे ही मनुष्य कर्म करता है। अतः वैदिक धी शब्द एक साथ विचार और कर्म दोनों का वाचक है। अब तक हमारे विचार और कर्म शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के होते थे, किन्तु आज से निश्चय करें कि हम शुभ विचार ही मन में लायेंगे और तदनुसार कर्म भी शुभ ही करेंगे। कभी-कभी किये जाने वाले अशुभ विचारों और अशुभ कर्मों के परिणाम-स्वरुप हमें दुष्फल या दुर्गति भी प्राप्त होती रही है। उस दुर्गति की परम्परा को आज हम आत्यन्तिक रुप से समाप्त कर दें, हमें सदा सुगति और सत्फल ही प्राप्त हों। यद्यपि हम अपने मनों में सबके प्रति सौहार्द रखने के लिए प्रयत्नशील रहे हैं, तो भी सम्भव है मानव-सुलभ दुर्बलतावश हमारे मानस के किसी कोने में द्वेषभाव भी छिपे बैठे हों, जो कभी अपने अनुकूल परिस्थिति पाकर प्रकट हो जाने का अवसर देखते रहते हों।

आओ, आज हम आत्म-निरीक्षण कर उन समस्त द्वेषभावों को खोज-खोजकर विनष्ट कर दें। सबके प्रति सौमनस्य, प्रेम और सख्य को ही धारण करें। साथ ही हम प्रगतिशील भी बनें। हमने अपने मनों में जो अन्धविश्वास पाले हुए हैं, जिनसे हमारी उन्नति अवरुद्ध है, उन्हें तिलांजलि दे दें। चारों ओर दृष्टि डालकर हम देखें कि ऐसे व्यक्ति कौन हैं जो यजमान बने हुए हैं, जो स्वार्थ को छोड़कर परार्थ-साधन में लीन हैं। उनमें कोई साक्षरता और विद्या के प्रसार का यज्ञ कर रहे होंगे। कोई अपंगों की सेवा का यज्ञानुष्ठान रचा रहे होंगे। कोई आतुरों की निःशुल्क चिकित्सा का यज्ञ चला रहे होंगे। कोई धर्मोद्धार-यज्ञ के सूत्रधार होंगे। कोई क्षात्र-धर्म-यज्ञ के कर्णधार होंगे। कोई कृषि-यज्ञ के स्रष्टा होंगे। कोई विद्यानुसन्धान-यज्ञ के परिचालक होंगे। इसी प्रकार अनेकों व्यक्ति व्रती यजमान बनकर यज्ञ के आयोजनों में तत्पर होंगे। उनमें से किसी यजमान से हम भी जा मिलें और उसके साथ मिलकर हम भी यज्ञ का अनुष्ठान कर दें। **हे विश्वेदवाः !** हे दिव्य भावनाओं से ओतप्रोत विद्वज्जनों! हमारे इन संकल्पों के पूर्ण होने में सहायक बनें।

पता - गीता आश्रम, वेद मंदिर, ज्वालापुर, हरिद्वार (उत्तराखंड)

संस्कृतार्थ :- १. सुध्यः शोभनप्रिय)। धी=कर्म, प्रज्ञा (निघं. २.१.,३,९) २. दुर् शुन। दुओशिव गतिवृद्धयोः। ३. वरीयः रुतरम् (निरु. ८.९) ४. मिनोति वधार्थक (निघं. २.१९), ५. सनुतः - निर्णीत अन्तर्हित (निघं. ३.२५), ६. प्रकर्षेण अञ्चन्तीति प्राञ्चः (प्र अञ्चु गतो). ७. अय गत, लोट्।

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय

आज देश को स्वामी श्रद्धानन्द जैसा नेता चाहिए

भारतीय स्वतंत्रता में अग्रणी भूमिका निभाने वाली संस्था आर्यसमाज के अग्रगण्य महापुरुषों में जिनका पुण्य स्मरण किया जाता हो, महान देशभक्तों की प्रथम पंक्ति में जिनका नाम श्रद्धा से लिया जाता हो जो अखिल भारतीय कांग्रेस के संकट मोचक माने गये हों, मोहनदास करमचन्द गाँधी को महात्मा बनाने वाले तथा शुद्धि आन्दोलन के प्रखर प्रणेता होने के बावजूद भी जिन्हें साम्प्रदायिक सौहार्द में अग्रणी मानकर दिल्ली के जामा मस्जिद की मिम्बर से मुसलमानों को देशभक्ति के लिए प्रेरित करने आमंत्रित किया गया हो, अंग्रेज सरकार से बहादुरी पूर्वक टक्कर लेने वाली छवि के लिए मशहूर, 1868 ई. में जिस महान् व्यक्तित्व ने अल्प समय में ही उस समय की विशाल धनराशि 30,000/-रुपये गुरुकुल के लिए दान स्वरूप संग्रह के साथ-साथ लगभग 1800 बीघे के पूरा गांव राष्ट्र महायज्ञ के लिए आहुत करके जिसने ऋषि ऋण चुकाने की पावन परंपरा का निर्वाह किया हो, ऐसे अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन से प्रेरणा लेकर आइए हम भी अपना जीवन धन्य करें।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का शिक्षा के क्षेत्र में अत्यन्त प्रकृष्ट चिंतन था इसलिए उन्होने छात्रों को विद्वान् मनीषी तथा ब्रह्मचारी बनाने के लिए बीसवीं सदी के आरंभ में अपने गुरूवर ऋषि दयानन्द के आदर्शों के अनुरूप गुरूकुल शिक्षा प्रणाली का इस आधुनिक युग मे सर्वप्रथम सूत्रपात किया था। यह प्रयोग उस काल खंड में सर्वथा नया एवं एकदम चौंकाने वाला था। फिर भी वह सफल हुआ यह प्रयोग कहीं एकांगी न रह जाये इसलिए गुरूकुल प्रणाली में अंग्रेजी विज्ञान आदि आधुनिक विषयों का प्रवेश भी किया गया गुरूकुल तो स्वामी जी के बाद भी खुले तथा आज भी चल रहें हैं। तथापि उनका क्षेत्र बहुआयामी न होकर केवल कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित है। आज अधिकांश गुरूकुलों की यही स्थिति है। यद्यपि आज गुरूकुल कांगड़ी में पर्याप्त परिवर्तन आ गया है, उस समय की विद्वत्ता तथा कर्मठता नहीं रह गई है।

इन कार्यों के साथ-साथ स्वामी जी तात्कालिक राजनीतिमें भी प्रमुख भूमिका निभाते रहे। स्वामी जी राजनीति में किसी पद के लिए नहीं गये थे, अपितु इसके माध्यम से समाज सुधार के लिए गए थे। आज सर्वत्र व्याप्त भ्रष्टाचार की राजनीति किससे छिपी है ? स्वामी जी ऐसे दल नेता के हामी नहीं थे। वे राजनीति में भी नैतिकता तथा धार्मिकता चाहते थे। इसलिए उन्होने लिखा था कि आज ऐसे धार्मिक दल की आवश्यकता है, जो दूसरों को धोखा देना भी वैसा ही पाप माानता हो जैसा कि अपने आपको धोखा देना। आर्य समाज ने राष्ट्रीय क्षेत्र में राजनीति को छोड़ दिया यह न तो आर्यसमाज के लिए शुभ रहा तथा न ही देश के लिए। राजनीति से दूर रहकर हम स्वामी दयानन्द द्वारा प्रतिपादित चक्रवर्ती साम्राज्य कैसे प्राप्त कर सकते हैं। यह कल्पना से परे हैं स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का दृष्टिकोण इसी सकारात्मक चिंतन पर आधारित था।

स्वामी श्रद्धानन्द सत्य के ग्रहण करने और असत्य को त्यागने के परम उपासक थे अज्ञान की अवस्था में उनका जीवन विपरीत दिशा की ओर बढ़ता रहा किन्तु आँख खुलते ही उन्होनें अपने दोषों को उसी प्रकार दूर फेंक दिया जैसे कि कोई गले में पड़े विषधर सर्प को। स्वामी जी का सत्य के प्रति कितना आग्रह एवं आदर था कि संन्यास लेते समय **पुत्रैषणा वित्तैषणा लोकैषणा मया परित्यक्ता** बोलते समय अन्त में बोल उठे **लोकैषणा तु मया न परित्यक्ता** क्या कोई इस समाज में मिलेगा इतना स्पष्टवादी यथार्थचिंतक ? प्रभु भक्ति एवं मृत्यु से अभय तो स्वामी जी को अपने गुरु ऋषि दयानन्द से ही प्राप्त हुए थे। प्रभुभक्त निश्चित ही मृत्यु से अभय रहता है। इसी कारण महात्मा बुद्ध दुर्दान्त डाकू अंगुलीमाल के सामने निहत्थे चले जाते हैं। ऋषि दयानन्द अपने आप को तोप के मुख के आगे बांध देने पर भी तथा कोई उनकी अंगुलियो को बत्ती बनाकर जला देने से भी सत्य को छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे तो

www.thearyasamaj.org

उनका शिष्यनिर्भीक संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द भी गोरे सैनिकों की संगीनों के सामने शान्त भाव से सीना खोलकर तान देते हैं और ललकारते हुए कहते हैं – **"संन्यासी का सीना खुला है हिम्मत हो तो चला दो गोली"**। यही है मृत्यु को जीतना, ऐसे व्यक्ति ही मृत्युञ्जय कहलाने के पात्र होते हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन में भी अधिक आश्चर्यजनक घटना 4 अप्रैल 1919 को हुई ऐसी घटना न भूतकाल में हुई न भविष्य में होने की संभावना ही है। मुस्लिम नेताओं के आदेश से दो प्रतिनिधि स्वामी श्रद्धानन्द के निवास पर पहुँचे। उन्हें सविनय निवेदन के बाद ससम्मान गाड़ी पर बैठाकर जामा मस्जिद लाए। प्रधान मौलवी सहित सभी मुसलमानों ने जयघोष के साथ स्वागत किया और नम्र निवेदन किया कि वर्तमान विकट समय में मुसलमानों को कर्त्तव्य का उपदेश करें। वेदी पर विराजमान स्वामी श्रद्धानन्द जी ने निम्न समयोपयोगी महत्वपूर्ण चिंतन एक वेद मंत्र के माध्यम से जनसमुदाय को सम्बोधित किया।

ओ३म् त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ अधा ते सुम्नमीमहे। जिसका अर्थ है– हे सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक कृपालो परमात्मन आप हमारे पिता के सदृश पालक हो ममतामयी माता के समान अनेक प्रकार से हमें सुख प्रदान करते हुए हित चिन्तक हो आपकी छत्र छाया में हमें परम सुख मिलता है। इस प्रकार आपने जामामस्जिद के पवित्र मंच से वेद मन्त्रों द्वारा एकता का सन्देश दिया। इसके पश्चात मुसलमान आपके दीवाने व रक्षक बन गये। असहयोग आन्दोलन में खूब कार्य किया जलियांवाला बाग काण्ड के बाद जब 40000 लोग जेलों में थे मार्शल लॉ लगा हुआ था तब कांग्रेस का महाधिवेशन अमृतसर में करने का निर्णय हुआ, ऐसे भयानक अवसर पर आपने पंजाब में आकर लोगों का साहस बढ़ाया। यह पहला अवसर था जब किसी सन्यासी ने यह पद सम्भाला था। यह राष्ट्रीय एकता अंग्रेज शासकों को तिलभर न सुहाई। उन्होनें ऐसी फूट डाली कि आज भी भारत को पाकिस्तान शान्त नहीं रहने दे रहा है। राष्ट्रीयता एवं निर्भीकता के कारण ही पंजाब के अमृतसर नगर में उस स्थिति में जबकि जनता जलियांवाला काण्ड से अत्यंत त्रस्त थी, स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अधिवेशन सम्पन्न कराने का अद्भुत साहसिक कर्त्तव्य सफलता पूर्वक निभाया था जो इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय बन कर रह गया। धन्य स्वामी श्रद्धानन्द और धन्य है उनकी निर्भीकता।

इस प्रकार राष्ट्रीय एकता के प्रबल पक्षधर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने आजीवन भारतीय समाज में फैली हुई सामाजिक विषमता के विरूद्ध सदैव समरसता संस्थापना के क्षेत्र में महती भूमिका निभाई अस्पृश्यता निवारण के लिए उन्होंने ऐसे आदर्श समाज के सामने उपस्थापित किये कि आज उसका उदाहरण मिलना भी असंभव है। अपनी परंपरागत उपासना पद्धति एवं राष्ट्रीय अस्मिता का परित्याग कर जो भूले भटके भाई-बहन अपनी मूलधारा से बहुत दूर जा चुके थे, उन्हें अपने पूर्व गौरव और महानता का परिचय प्रदान कर अपने गले लगाया। ऊंच-नीच की गंभीर खाई को पाटने में उस राष्ट्र संत ने जो अनुपम प्रयत्न किए उन्हें चन्द पंक्तियों में समेटना सर्वथा असंभव है। उन्होंने धार्मिक रूढ़िवादिता को सदा सदा के लिए परिसमाप्त कर भारतीय समाज को पूर्व कालीन ऋषि युग का स्मरण करा कर वैदिक विचारधारा का प्राण प्रण से प्रचार करते हुए धर्म के शुद्ध स्वरूप को जनता के सामने रखा। जातिवाद को स्वामी जी स्वस्थ समाज के लिए घोर कलंक मानते थे, यही वजह है उनके द्वारा स्थापित गुरूकुल कांगड़ी (अब विश्वविद्यालय) में पहले आचार्य कक्षा पढ़ते तक किसी बालक की जाति का ज्ञान किसी को हो नहीं पाता था। भेदभाव से कोसों दूर स्वामी जी का व्यक्तित्व इतना महान था कि वे अपने जीवन काल में ही गरीबों के मसीहा माने जाते थे। सुधारवादी आन्दोलन के कारण दिग् दिगंत में फैल रही स्वामी जी की कीर्ति से असंतुष्ट होकर षड़यंत्रकारियों द्वारा एक मदान्ध मुसलमान के हाथों स्वामी जी 23 दिसंबर 1926 को शहीद हो गये। आइये इस प्रेरक अवसर पर संकल्प लें, कि हम राष्ट्रीय अस्मिता की सुरक्षा के लिए अपनी जान की कीमत देनी पड़े भी तो पीछे नहीं हटेंगे। यही उस महान आत्मा के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

– आचार्य कर्मवीर

www.thearyasamaj.org

ज्वलन्त-प्रश्न अंधविश्वास के मकड़जाल में भटकता मानव

- ले. अर्जुनदेव चड्ढा

आधुनिक युग विज्ञान के युग में कभी-कभी ऐसा घटनाएं हो जाती है जो कि व्यक्ति को सोचना पर मजबूर कर देती हैं कि वह किस युग में जी रहा है। यह घटना राजस्थान के कोटा शहर की है जहां २०१२ में भीलवाड़ा से ईलाज के लिए कोटा लाते समय एक महिला का कोटा में निधन हो गया। निधन के एक वर्ष पश्चात पूरा परिवार परिजनं के साथ बस भर कर कोटा आया और महिला को कोटा में जिस स्थान पर मृत्यु हुई वहां कुछ टोने-टोटके करने लगे। लोगों ने पूछा तो उन्होंने बताया कि उनको किसी पण्डिंत ने कहा है कि घर में जो परेशानियां चल रही है उसका कारण मृतक की आत्मा का भटकना है, इसलिए भटकती हुई आत्मा को साथ लेने आए हैं।

यह तो एक उदाहरण मात्र है ऐसी अनेकों घटनाएं, तथ्य विज्ञान और दर्शनशास्त्र के तर्कों से परे प्रतिदिन समाज में देखने तथा सुनने को मिलती है। यह देखकर आश्चर्य होता है कि आज के इस वैज्ञानिक युग में भी मानव अंधविश्वासों के घोर अंधेरे में फंसा पड़ा है।

आज भी कुछ स्वार्थी पाखण्डियों द्वारा फैलाये जा रहे मिथ्या प्रचार के कारण शिक्षित होते हुए भी लकीर का फकीर बना हुआ है जबकि धार्मिक ग्रंथ किसी भी प्रकारके टोना-टोटके तथा अंधविश्वास का समर्थन नहीं करते हैं।

वशीकरण तांत्रिक क्रियाऐं, गंडे ताबीज, भूत-प्रेत की कपोल कल्पना, धातु प्लास्टिक से बने यंत्र न जाने अंधविश्वास किन-किन रुप से लोगों के मन में घर किये हुए हैं। कुछ चालाक व्यक्ति मानव मन में व्याप्त इसी भय नामक कमजोरी का फायदा उठाकर कभी नारियल को मंत्र से फोड़कर दिखाना, नींबू में खून निकालना, सफेद सरसो के दानों को काला करना, रंगीन फूलों को रंगहीन कर देना, भभूत प्रकट कर खिलाना, बिना किसी साधन के जल छिड़क कर दीपक जलाना, आत्माओं से बातें करा जैसे माध्यमों से लोगों को भयभीत कर अपना उल्लू सीधा करते नजर आते हैं।

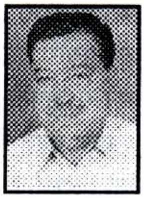

सबसे बड़ी बात है कि यह सब होता है धर्म के नाम पर। धर्म की आड़ में फल-फूल रहे इस अंधविश्वास केधंधे में कितने ही लोग अपना जीवन भर की कमाई डुबाते नजर आते हैं। और अंत में मिलता है उन्हें सिर्फ धोखा तथा शारीरिक, मानसिक यंत्रणा। जिन शारीरिक व मानसिक परेशानियों से बचने के लिये वे तंत्र-मंत्र के इस मार्ग को चुनते हैं, अंत में स्वयं को ठगा हुआ महसूस करते हुए लुटे-पिटे तथा हताश दिखाई पड़ते हैं। और कई बार स्थिति इतनी विकट हो जाती है कि व्यक्ति को आत्महत्या तक करनी पड़ती है।

इन अंधविश्वासी अनुष्ठानों की मार का सामना सर्वाधिक महिलाओं को करना पड़ता है। कभी भूत-प्रेत, चुड़ैल तथा डायन न जाने कितने रुपों में उन्हें प्रताड़ित होना पड़ता है। यहां तक अनुष्ठानों की आड़ में शारीरिक शोषण का भी सामना करना पड़ता है।

सत्यता तो यह है कि इन सभी अंधविश्वासी कर्मकाण्डों का कोई भी धार्मिक कारण नहीं है। वेद, उपनिषद् दर्शन आदि धर्मशास्त्रों में इनका कोई उल्लेख ही नहीं है। केवल मानव मन में व्याप्त भय तथा सांसारिक कारणों से जीवन में आने वाली कठिनाईयों का फायदा उठा कर कुछ लोगों ने मनुष्यों के शारीरिक, मानसिक तथा आर्थिक शोषण का एक तंत्र विकसित कर लिया है, जिसे चालाकी से धार्मिक रुप दे दिया गया है।

वेद, उपनिषदों तथा दर्शन में किसी भी रुप में आत्माओं के भटकने, उनसे वार्तालाप करने आदि का कोई भी उल्लेख नहीं है। किन्तु इन ग्रंथों के ज्ञान से अंजान व्यक्ति केवल धार्मिक अंधविश्वास के नाम पर लुटता चला जाता है। गीता में स्पष्ट लिखा है कि जैसे व्यक्ति पुराने कपड़े बदलकर नये कपड़े पहन लेता है, उसी प्रकार आत्मा एक शरीर को छोड़कर ईश्वर की व्यवस्था के अनुरुप नये शरीर को धारण

www.thearyasamaj.org

करती है। आधुनिक विज्ञान भी इसी बात का समर्थक है।

वास्तव में अंधविश्वास के इस धंधे से रोजी रोटी कमाने वाले इन चालाक लोगों ने विज्ञान को ही अपना माध्यम बनाया हुआ है। विज्ञान की रासायनिक क्रियाओं, विधियों का प्रयोग कर ये लोग चमत्कार आदि दिखाकर लोगों के मन में अपनी पैंठ जमा लेते हैं और बाद में ऐसे लोगों का शोषण करते हैं। उदाहरण के रुप में परमैंगनेट ऑफ पोटास को ग्लिसरीन पर गिराकर आग प्रकट करना, कटहल के दूध लगे चाकू से नींबू काटने पर खून टपकना दिखाना, नौसादर तथा चूने के मिश्रण को सूंघा कर बेहोशी दूर करना तथा बिच्छू के डंक का उपचार करना। फिटकरी के घोल से पहले लिखना जो दिखाई न दे फिर बाद में उस पर चुकन्दर के रस को प्रयोग कर उसे दिखाना जैसे अनेकों प्रकार के तंत्र-मंत्र, जादू टोने-टोटके के पीछे विज्ञान तथा उसकी विधियां छुपी हुई हैं न कि कोई रहस्यमयी शक्ति।

इसलिए सर्वप्रथम तो मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह अपने परिवार में दुख-तकलीफ आने पर उसके कारणों को खोज कर निवारण करें। धार्मिक अंधविश्वास से बचे, वेद उपनिषद आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय करे। जिससे धर्म का सत्य ज्ञान हो सके तथा यदि कोई चालाक तंत्र मंत्र के नाम पर भोले भाले लोगों को ठग रहा हो तो विज्ञान के माध्यम से बेनकाब करे। क्योंकि वेद कहते हैं - **"अंधन्तम प्रविशन्ति ये अविद्याम् उपासते"** जो अविद्या में घिरे रहते हैं वे ही अंधविश्वास रुपी अंधकार में गिरते हैं इसलिए ज्ञान के माध्यम से समस्याओं का निवारण करे न कि तंत्र मंत्र तथा पाखण्ड से। स्मरण रहे कि लगभग आठ माह पूर्व भी कोटा के महाराज भीमसिंह अस्पताल में इसी प्रकार के पाखण्ड का पूरा नाटक किया और ढोंगियों ने आत्मा को पकड़ने का दावा किया।

आर्यसमाज के जिला प्रधान ने तब और अब हुए इन अंधविश्वासों को समाचार पत्रों में पढ़ा तो उसी समय कोटा कलेक्टर को फोन कर ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो का आग्रह किया। व्यस्त यातायात को रोककर पाखण्डी पाखण्ड करते रहे और आमजन परेशान होता रहा और प्रशासन सोता रहा। शासन-प्रशासन-पुलिस को इस प्रकार के आडम्बरों को तुरन्त रोकने के आदेश जारी करने का निवेदन किया। आज आवश्यकता है जागरुक होने की।

पता - ४-५, २८, विज्ञाननगर कोटा-३२४००५ (राज.)

तू कहाँ है

परेशानियों में मुबतिला सारा जहां है,
पता पर सुकूं का मिलता कहां है
सच है यही मौत आनी है इक दिन
झूठ है यही सारा अपना जहां है
इज्जत दिलाती तो धूल भी चटाती
रुतबा जहां में दिलाती जुबां है
अकल-ओ-हुनर से करते जो हासिल
कदमों में उनके झुकता जहां है
पड़ी हैं भंवर में जिन्दगी की कश्ती
किनारे जो लाये वही बादवां है
यूं बदले है देखो हालात सारे
वही है जमीं और वही आसमां है
उंगली दूसरों पर उठती क्यों 'मोहन'
जरा खुद को देखो खड़ा तू कहां है।

- *मोहनलाल चड्ढा*, १७३, एमआईजी, हुडको भिलाई

श्रद्धा

श्रद्धा रस है।
श्रद्धा जीवन है....
श्रद्धा ईश्वर स्वरुप है
श्रद्धा संन्यास है
श्रद्धा के बिना कभी कुछ नहीं...
श्रद्धा ऋषियों का बल है
श्रद्धा का सरोवर अमृत समान है...
श्रद्धा रुप स्वाभिमान है।
श्रद्धा से वेद बने
श्रद्धा से ही निज धर्म बचे
श्रद्धा बड़ी महान है
श्रद्धा हर हृदय का सिंगार है....
श्रद्धा ही ऋषि की पहचान है

- मुकेश कुमार (ऋषि वर्मा) युवा साहित्यकार
रिहावली (तारौली) फतेहाबाद (आगरा) उ.प्र. 283111

www.thearyasamaj.org

तात्विक

ईश्वर की महती कृपा ज्ञान पूर्वक आराधना से ही प्राप्त होगी

- कन्हैयालाल आर्य
वरिष्ठ उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा

ईश्वर की महती कृपा हम पर सदैव बरसती रहती है परन्तु हम उस से बेखबर रहते है। जो उस बरसती हुई कृपा का पान कर लेते हैं। वह अपना मार्ग प्रशस्त कर लेते हैं और अमरत्व की ओर बढ़ जाते हैं और जो उस कृपा की उपेक्षा करते है वह संसार सागर में गोते खाते रहते हैं। ईश्वर बड़ा दयालु है उसकी शरण में जाकर तो देखो वह किस प्रकार अपने आंचल में ले लेता है। जिस प्रकार एक बच्चा अपनी माता की गोद में जाकर अपने आपको प्रत्येक प्रकार से सुरक्षित अनुभव करता है उसी प्रकार हम सब उस परमपिता परमात्मा के आंचल का सहारा लेंगे तो हमें किसी प्रकार का भय नहीं रहेगा।

हम चारों दिशाओं से अभय प्राप्त कर लेंगे। अथर्ववेद के १९वें सूक्त संख्या १५ से पांचवे व छठे मन्त्र में कहा है -

ओ३म् अभयं नः करत्यन्तारिक्षभयं द्यावापृथिवी उभे इमे।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु ॥
अथर्ववेद१९.१५.५

नः = **हमारे लिये**, **अन्तरिक्षम** = अन्तरिक्ष, **अभयं करति** = निमयता करता है, **इमे** = ये, **उभे** = दोनों, **द्यावापृथिवी** = द्युलोक व पृथिवी लोक, **अभयम्** = निर्भयता करते हैं, **नः** = हमारे लिये, **पश्चात्** = पीछे से, **अभयम्** = निर्भयता हो। **पुरस्तात्** = आघे से, **अभयम्** = अभय हो तथा **उत्तरात्** = ऊपर से व **अधरात्** = नीचे से, **अभयम् अस्तु** = निर्भयता हो। अर्थात् हमें चारों दिशाओं से अभय प्राप्त हो जायेगी।

ओ३म् अभयं मित्रादभयमित्रादमयं ज्ञातादमयं परोक्षात्।
अभयं नक्तमयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ॥
अथर्ववेद १९.१५.६

मित्रात् अभयम् = मित्र से हमें अभय हो, **अभित्रात् अभयम्** = शत्रु से अभय प्राप्त हो, **ज्ञातात्** = ज्ञात अर्थात् परिचित से **अभयम्** = अभय हो और **परोक्षात्** = जो परोक्ष हो, उससे भी **नः** = हमें, **अभयम्** = अभय हो **नक्तम अभयम्** = रात्रि में अभय हो, **नः** हमारे लिये **दिवा** = दिन में **अभयम्** = अभय हो **सर्वः आशा** = सब दिशाएं **मम** = मेरी **मिंत्रं भवन्तु** = मित्र हो। अर्थात् हम जब प्रभु की शरण में चले जायेंगे तो भी सभी दिशाओं में हमें अभय प्राप्त हो जायेगी।

यही अभय होना ही तो उसके निकट होना है। तब उस प्रभु से कहिए कि हे प्रभु! मुझे अपनी शरण में रख लो मैं तुम्हारा दास बन कर रहना चाहता हूँ। तुझे तज कर मैं कहाँ जाऊँ और कोई भी तो ऐसा सम्बन्धी नहीं है जो सदा के लिये मेरा अपना बन सके। बाकी सारे सम्बन्ध तो क्षणिक हैं कुछ समय के लिये साथ देने वाले हैं। केवल तेरा ही सहारा ऐसा है जो सदा सदा के लिए मेरा है। जब तक मैं और सहारे ढूंढता रहा तभी तो दर दर भटक रहा हूँ। मुझे कहीं भी विश्राम नहीं मिल रहा। ऐ प्रभु! जब तुम अपने प्यार की दृष्टि मुझ पर डालोगे तो मेरा बेड़ा पार हो जायेगा।

यदि हम वास्तव में प्रभु के सच्चे दास बनना चाहते हैं तो हमें सबसे पहले अपनी वासनाओं इच्छाओं तथा कामनाओं को त्यागना होगा। जब तक यह कामनायें दग्ध नहीं होगी तो अन्दर के पट कैसे खुलेंगे। पहले हमें बाहर की गन्दगी को अन्दर आने से रोकना होगा। तब कही उसी का दिया हुआ आनन्द हम प्राप्त कर सकेंगे। हम इस भौतिक जगत से आनन्द की प्राप्ति करने के पीछे पागल हुए फिरते हैं यह भौतिक जगत हमारे शरीर को कुछ समय के लिए सुख तो दे सकता है, परन्तु हमारे मनों को शान्ति और आत्मा को आनन्द देना इसके वश की बात ही नहीं है क्योंकि यह इसके पास है ही नहीं तो देगा कहां से ?

www.thearyasamaj.org

यह प्रकृति तो केवल सत है। हम जीवात्मायें सत और चित है और परमपिता परमात्मा सत्, चित और आनन्द है तभी तो हमें आनन्द मिलेगा। क्योंकि वह आनन्द का स्वामी है तभी आनन्द देगा प्रकृति के पास तो आनन्द है ही नहीं तो देगी कहाँ से ? जिस प्रकार हम अग्नि के निकट जाते हैं तो वह अपनी उष्णता रुपी गुण हमें प्रदान करती है जल के निकट जाते हैं तो वह शीतलता प्रदान करता है इसी प्रकार परमपिता परमात्मा के पास जायेंगे तो वह हमें आनन्द देगा जिस प्रकार अग्नि अपना गुण उष्णता, जल अपना गुण शीतलता हमें देता है। इसी प्रकार परमात्मा अपना गुण आनन्द हमें प्रदान करेगा। अतः हमें उसके आनन्द को प्राप्त करने के लिए बाहर की इच्छाओं को दग्ध करना होगा।

प्रभु जो कुछ भी दे रहा है वह उसकी इच्छा की कृपा हैं। एक व्यक्ति हलवा खा रहा है उस हलवे में भी दोष ढूंढ रहा है और दूसरा व्यक्ति सूखी रोटी खा रहा है। परन्तु उस सूखी रोटी को देख देख कर प्रभु की न्याय व्यवस्था पर आनन्दित हो रहा है। वह यह समझ रहा है कि यह सूखी रोटी भी उसने दी है तो यह भी उसी की दया का परिणाम है। वह सोचता है कि मुझे सूखी रोटी तो दी है मैं उनसे तो अच्छा हूँ, जिनके पास सूखी रोटी भी नहीं है अतः उसी सूखी रोटी में भी आनन्द का अनुभव कर रहा है तो समझो उस पर महती कृपा हो रही है और दूसरा व्यक्ति हलवा खाता हुआ भी उसी में दोष ढूंढ रहा है तो समझो उस पर प्रभु की दया नहीं बरस रही है। जब हम उस सूखी रोटी में प्रभु की महती कृपा को मानने लगेंगे तो प्रभु ही प्रभु चारों ओर दिखाई देने लगेगा फिर बार बार नहीं मरना पड़ेगा, एक बार मर कर उस आनन्द को सदा सदा के लिये प्राप्त कर लोगे, जिसके लिए न जाने कितनी योनियों में गोते खा कर भटक रहे हो, परन्तु यह स्थिति तब आयेगी जब हम ज्ञानपूर्वक उसी की आराधना करेंगे।

पता : ४/४५ शिवाजीनगर, गुड़गांव हरियाणा

श्रुति-सुधा

- **स्वामी धुव्रदेव जी परिव्राजक** (उपाध्याय)

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥

पदार्थ :- हे **(प्रजापते)** सब प्रजा के स्वामी रक्षक परमात्मा ! **(त्वत्)** आपसे **(अन्यः)** भिन्न दूसरा कोई पदार्थ **(ता)** उन **(एतानि)** इन **(विश्वा)** सब **(जातानि परि बभूव)** उत्पन्न हुए जड़ चेतनादिकों को नहीं तिरस्कार करता है अर्थात् आप सर्वोपरि हैं या इन सब पर बलवान् हैं या इन सब उत्पन्न हुए जड़ चेतनादि में व्याप्त हैं। अतः **(यत्कामाः)** जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले होकर **(वयम्)** हम लोग **(ते)** आपका **(जुहुमः)** आश्रय लेवें या आपकी प्रशंसा करें या उपासना करें **(तत्)** वह-वह कामना के योग्य वस्तु **(नः)** हमको **(अस्तु)** आपकी कृपा से प्राप्त होवे जिससे **(वयम्)** हम लोग **(रयीणाम्)** विद्या सुवर्णादि धनों के **(पतयः)** रक्षक स्वामी **(स्याम)** होवें। ***(सं.वि.+दया.कृत यजुर्वेदभाष्य)***

भावार्थ (१) :- जो परमेश्वर से उत्तम, बड़ा, परमैश्वर्ययुक्त, सर्वशक्तिमान् पदार्थ कोई भी नहीं है, तो उसके तुल्य भी कोई नहीं। जो सब का आत्मा, सब का रचने वाला, समस्त ऐश्वर्य का दाता ईश्वर है उसी की भक्ति विशेष और अपने पुरुषार्थ से इस लोक के ऐश्वर्य और योगाभ्यास के सेवन से परलोक के सामर्थ्य को हम लोग प्राप्त हों।

(ऋ.दया.कृत यजुर्वेदभाष्य अ.२३/मं.६५)

भावार्थ (२) :- हे मनुष्यों ! जो सब जगत् में व्याप्त है, सब के प्रति माता-पिता के समान वर्तमान है उस जगदीश्वर की ही उपासना करो। इस प्रकार अनुष्ठान से तुम्हारी सब कामनायें अवश्य सिद्ध होंगी।

(ऋ.दया.कृत यजुर्वेदभाष्य अ.१०/मं.२०)

पता - आर्यवन, रोजड़, पन्ना-सागपुर, जिला-साबरकांठा (गुजरात) ३८३३०७

www.thearyasamaj.org

★ श्री ओमप्रकाश बजाज

यह नाराजगी किस पर और क्यों ?

गुप्ता जी टेलीफोनं विभाग वालों से रुष्ट है, शर्माजी को बिजली विभाग वालों से शिकायत है। श्रीवास्तव जी को नगर निगम वालों से गिला है। यादवजी डाकखाने वालों का रोना रोते हैं। नेमा जी जब भी मिलते हैं रेल्वे वालों को कोसते मिलते हैं। हम छः सात लोग इकट्ठे प्रातः भ्रमण हेतु जाते हैं। रास्ता भर चर्चा का केन्द्र बिन्दु एक ही होता है - विभिन्न विभागों के कर्मचारियों की अकर्मण्यता, काम न करने की प्रवृत्ति, बढ़ती हुई अनुशासनहीनता, फैलता हुआ भ्रष्टाचार, जनसाधारण की अवहेलना, हर स्तर पर हर जगह आम आदमी का तिरस्कार और शोषण।

बात कहीं से भी चले, घूम फिर कर आखिर आ इसी मुद्दे पर जाती है। आपसी चर्चा में ही नहीं समाचार पत्रों में भी इसी विषय पर तीखी टिप्पणियाँ होती है। अग्रलेख और संपादकीय लिखे जाते हैं। पाठकों के पत्र और प्रतिक्रियाएँ छपती है। इसमें कोई संदेह नहीं कि आज हर व्यक्ति कर्मचारी वर्ग के व्यवहार, कार्यशैली, मानसिकता से त्रस्त है।

आखिर यह गुस्सा, यह नाराजगी, यह आक्रोश किस पर और क्यों ? जिनकी सुस्ती, लापरवाही, कामचोरी, अनुशासनहीनता, दुर्व्यव्यहार, भ्रष्टाचार आदि कुप्रवृतियों पर हम आप निरन्तर क्षोभ एवं आक्रोश व्यक्त करते हैं वे क्या कहीं बाहर से आए हैं ? क्या वे हमसे आप से भिन्न है, अलग है ? नहीं, वे भी तो हम में से ही है। कैसी विडम्बना है कि स्वयं अपने ही रवैये पर हमें शिकायत भी है ! मजे की बात तो यह है कि बिजली विभाग वाले को रेलवे वालें से शिकायत है तो रेलवे वाले को बिजली वाले से, इसी प्रकार हर एक को एक दूसरे से असंतोष है।

आखिर ऐसा है क्यों ? जरा दिल पर हाथ रख कर बताइए कि किसी भी विभाग में कार्यरत आप का भाई, बेटा, बेटी यदि काम पर देर से जाता है, जल्दी भाग जाता है, लगन और ईमानदारी से काम नहीं करता, लोगों से दुर्व्यवहार करता है, घूस लेता है, अनुशासनहीन है, भ्रष्ट है तो क्या आप ने कभी उसे रोका टोका या समझाया बुझाया है ? यदि आप की पत्नी बहन या बेटी स्कूल या कालेज में पढ़ाने के समय अथवा कार्यालय में काम के समय गप लड़ाती, चाय पीती या स्वैटर बुनती है तो क्या आपने कभी उसे मना किया है ? सम्भवतः नहीं, यदि आप स्वयं भी एक कर्मचारी है तो जरा अपने अंदर झांक कर भी देख लीजिए कि कहीं आप स्वयं भी यही कुछ तो नहीं करते !

हमारी सामान्य प्रवृति ही यह है कि हमें दूसरों की आंख का तिनका तो नजर आ जाता है किन्तु अपनी आंख का शहतीर भी दिखाई नहीं पड़ता। हम दूसरों को सुधारने की बात तो करते हैं मगर स्वयं अपने ऊपर भूल कर भी निगाह नहीं डालते। पुरानी कहावत है नां कि "औरों को नसीहत खुद मियां फजीहत" बुजुर्ग कह गए हैं कि "खैरात हमेशा घर से शुरु होती है"।

जिन बातों की शिकायत हमें दूसरों से है, आवश्यक है कि सब से पहले हम स्वयं अपने आपको, अपने भाई, बेटे, बहन, पत्नी, बेटी को उनसे दूर करें। तभी बात बन सकती है। स्वयं दोषी होते हुए उन्हीं कमियों त्रुटियों के लिए दूसरों की शिकायत करने से कोई लाभ नहीं। यह भी कभी मत सोचिए कि एक व्यक्ति या चंद व्यक्तियों के आचरण में बदलाव या सुधार से क्या होगा। बूंद-बूंद से घट भरता है। बदलाव का आरम्भ सदैव इक्का-दुक्का से होता है। किसी भी अच्छे काम की शुरूआत ही कठिन होती है। बाद में तो लोग जुड़ते जाते हैं और कारवां बनता जाता है।

पता - बी-२, गगन विहार, गुप्तेश्वर, जबलपुर (म.प्र.)

www.thearyasamaj.org

२३ दिसम्बर **बलिदान दिवस पर विशेष**

स्वामी श्रद्धानन्द की दूरदर्शिता के सुपरिणाम

- **मनुदेव** 'अभय', विद्यावाचस्पति, एम.ए.

एक बार एक दार्शनिक एक तिपाई को बड़े ध्यानपूर्वक देख रहा था। उस तिपाई (तीन टांग वाली) के ऊपर जल से भरा हुआ एक कलश शोभायमान हो रहा था। वह दार्शनिक उस तिपाई की ओर टकटकी लगाये हुए यह खोज में था कि इसकी कौन सी टांग छोटी है अथवा अथवा वक्र (टेढ़ी) है। वह घंटो उस तिपाई को निहारता रहा कि इन तीन टांगें न केवल समान है, अपितु इनके ऊपर रखा पटिया सी समतल चिकना और मजबूत है, यही कारण है कि ऊपर रखा हुआ कलश भी सुन्दर दिखाई दे रहा है। हमारे सुधी पाठक अब समझ गये होंगे कि इस राष्ट्र की त्रिविभूतियों ने इस राष्ट्र को ऊंचा उठाने में अपने स्तर पर प्रयास तथा त्यागमय वृत्ति के द्वारा अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया। वे भारतीय इतिहास के उज्ज्वल नक्षत्र हैं स्वामी श्रद्धानन्द, सरदार पटेल एवं डॉ. अम्बेडकर।

महात्मा मुंशीराम अर्थात् स्वामी श्रद्धानन्द ने वर्ष प्रतिपदा संवत् १९५९ तदनुसार २ जनवरी १९०२ को पर्वतों की उपत्यकाओं से घिरे गंगा किनारे कांगड़ी ग्राम में यह गुरुकुल अपने दो पुत्रों हरिश्चन्द्र तथा इन्द्रजी को लेकर प्रारम्भ किया। कदम बढ़ते गये, कारवां बनता गया। संन्याश्रम में प्रवेश करने के पश्चात् वे स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। जामा मस्जिद की गुम्बद से दिल्ली के समस्त मुसलमानों के अनुरोध पर उन्होंने वेद मंत्र बोलकर विश्व बन्धुत्व होने की, विश्व मित्र होने की घोषणा की। जालियांवाला बाग के बाद कांग्रेस का अधिवेशन का स्वागताध्यक्ष बनकर हिन्दी में राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सौहार्द्रता तथा छुआछूत और उंच-नीच की भावनाएं समाप्त करने का सन्देश कांग्रेस के मञ्च से दिया। स्वामी श्रद्धानन्द की बढ़ती लोकप्रियता और सफल नेतृत्व तथाकथित 'महात्मा' को फूटी आंख न आया। अपने व्यक्तित्व को उभारने के लिए भूमिका उस समय बन गई जब कोकोनाथ कांग्रेस अधिवेशन में तत्कालीन छः करोड़ अछूतों में से आधे अर्थात् तीन करोड़ अस्पृश्य वर्ग के लोगों को धर्म परिवर्तन कर मुसलमान बनाने का प्रस्ताव धूर्त मुसलमान मौलवी ने रखा। उस समय कथित 'महात्मा' मुस्लिम तुष्टिकरण की इच्छाओं के कारण मौन रहे। गांधी जी की इस भूमिका से स्वामी श्रद्धानन्द के हृदय को गहरी ठेस पहुंची तथा उन्होंने अधिवेशन का बहिष्कार कर कांग्रेस से त्याग पत्र दे दिया। हमारे भोले भण्डारी गांधी जी यह रोड़ा हटाना ही चाहते थे, ताकि कांग्रेस में उनकी गहरी पैठ और मुस्लिमों में लोकप्रियता बढ़े। जबकि इसके ठीक विपरीत मौ. शौकतअली और मो. मोहम्मद अली महात्मा जी को हिन्दुओं का प्रतिनिधि मानकर इनसे मन ही मन घृणा करते थे। इस देश का दुर्देव ही कहा जा सकता है, जबकि गांधी जी को मित्र और शत्रु की सूझ समाप्त हो गई थी।

महात्मा बनने की राम कहानी

ह=हिन्दु, म=मुसलमान = हम (स्वामी श्रद्धानन्द)

इस तथ्य को स्वीकार करने में दो मत नहीं हो सकते कि श्री मोहनदास करमचन्द गांधी 'महात्मा' कोटि के थे। गांधी जी ने प्रार्थना प्रवचनों में कई बार स्वीकार किया कि वे वैदिक महात्मा नहीं अपितु सनातनी पौराणिक महात्मा है। यह महात्मा उपाधि भी अमर हुतात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) ने गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव पर गांधी जी को अपना छोटा भाई मानते हुए अभिनन्दन समारोह में भेंट स्वरुप प्रदान की थी। गांधी जी को यह प्रत्यय नहीं अपितु उपसर्ग इतना भाया कि महात्मा और गांधी जी एक दूसरे के लिए पर्याय बन गये। उपाधि मिली आर्यसमाज के गुरुकुल से किन्तु वे सनातनी (पौराणिक) महात्मा बनकर विश्व विख्यात हो गये। इस महात्मा शब्द को वे आजीवन सीने से चिपकाये रहे और संसार उनकी पूजा करता रहा। गांधी जी में लोकेषणा अधिक थी वे ईर्ष्या के कारण अन्य को अपने से

www.thearyasamaj.org

हमें यह स्वतंत्रता न तो भीख में ही मिली है और न तालियां बजाने से मिली है, किन्तु इसकी प्राप्ति के लिए हमने जवानी का गर्म खून दिया है, हमने इसका मूल्य चुकाया है। हमारे लिये यह मूल्यवान है।

बड़ा देखना नहीं चाहते थे।

कांग्रेस से हटकर स्वामी श्रद्धानन्द हिन्दू महासभा से जुड़े, परन्तु शुद्धि आन्दोलन का प्रारम्भ करने, मेब और जाटों को जो कि मुस्लिम बन गये थे, शुद्ध कर पुनः हिन्दू जाति में मिलाने का आन्दोलन चलाने हेतु शुद्धि सभा स्थापित की। काश ! स्वामी श्रद्धानन्द पंजाब-हरियाणा में यह शुद्धि आन्दोलन नहीं चलाते तो सन् १९४७ में भारत-विभाजन के समय विशाल पंजाब की क्या स्थिति होती, इसकी कल्पना करते ही शरीर में सिहरन या कंपकंपी आ जाती है। इस शुद्धि आन्दोलन में 'महात्मा' जी को बड़ी पीड़ा होने लगी और वे 'हरिजन' पत्रिका में उनके विरुद्ध विष उगलने लगे।

इसी प्रकार जाति-पाति के बखेड़े के विरुद्ध आन्दोलन कर समाज में समरसता तथा एकता दिखाई देने की दृष्टि में भी उन्होने बड़ा कार्य किया। आज भी इन दोनों आन्दोलनों की बहुत आवश्यकता है। इसीलिए हमारी यह ध्रुव धारणा ठीक है कि स्वामी श्रद्धानन्द महान देशभक्त तथा दूरदर्शी महान विभूति थे।

सरदार वल्लभभाई पटेल भारतमाता के वीर महान सपूत थे, जिन्होने अपनी दूरदर्शितापूर्ण दृष्टि से देश की अविस्मरणीय सेवा की। वे महर्षि दयानन्द, आर्यसमाज, वैदिक धर्म तथा स्वामी श्रद्धानन्द के कार्यों से भलीभाति परिचित होकर (गुजरात) में जन्मे वल्लभभाई पटेल अपने व्यक्तित्व आदर्श एवं देश भक्ति के गुणों के कारण कांग्रेस में सरदार माने जाते थे। वे वास्तव में सर अर्थात् बुद्धि-मस्तिष्क धारक तथा तथ्यधारक धारणा रखने वाले थे। उनके साथ ही कथित 'महात्मा' जी ने उपेक्षा तथा पक्षपात का व्यवहार किया। कांग्रेस की सम्पूर्ण कार्यकारिणी सरदार वल्लभभाई पटेल को स्वतंत्र देश का प्रधानमंत्री बनाना चाहती थी। किन्तु शायद यह देश का दुर्भाग्य था कि महात्मा जी ने किसी की नहीं सुनी और अपनी हठवादिता के आधार पर उन्होने श्री जवाहरलाल नेहरु को प्रधानमंत्री तथा सरदार वल्लभभाई पटेल को गृहमंत्री घोषित कर दिया। उलेल्खनीय है कि श्री जवाहरलाल नेहरु ने स्वयं अपने व्यक्तित्व का परिचय इस प्रकार दिया है-

"मैं संस्कारों से मुसलमान, शिक्षा में अंग्रेज तथा जन्म से कश्मीरी हूँ। मैं दैवयोग से, जहां मैं विवश था, हिन्दू-ब्राह्मण परिवार में उत्पन्न हुआ हूं। मैं पाश्चात्य शिक्षा से प्रभावित होने के नाते ईश्वर में कोई आस्था नहीं रखता।

यह सारा परिवर्तन सरदार पटेल स्वयं अपनी आंखों से देख रहे थे। किन्तु देश की तत्कालीन गंभीर अवस्था (देश विभाजन) तथा गांधी जी के प्रति श्रद्धा रखने के कारण उन्होने देश हित में गृहमंत्री पद को उत्साहपूर्वक स्वीकार किया। हमारी ये मान्यता है कि परमात्मा जो कुछ करता है, वह ठीक ही करता है। उसके यहां न देर है और न अंधेर है। वह अहैतुक कृपा की वर्षा करता रहता है। यह ऐतिहासिक सत्य है स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश को ५५२ रियासतों की एक तिरंगे झण्डे के नीचे लाकर दृढ़ भारत बनाने का काम सरदार पटेल सरीखे ही कर सकते थे। हैदराबाद का नवाब अपनी आदत के अनुसार पाकिस्तान में सम्मिलित होना चाहता था, परन्तु शादिन की ताकत में वह सरदार के सम्मुख झुक गया और भारत में सम्मिलित हो गया। इसे देख कई नवाबों ने आत्मसमर्पण कर दिया।

इसके पूर्व सन् १९३९ में आर्यसमाज ने नागरिक अधिकारों, धार्मिक स्वतंत्रता तथा सामाजिक समरसता को प्राप्त करने के लिए हैदराबाद के निजाम को पहिले ही औंधा कर दिया था। इसीलिए सरदार पटेल ने उसके ठीक ८ वर्ष पश्चात् ठीक ही कहा था- यदि आर्यसमाज ने इस नवाब को अपनी शक्ति के सम्मुख समर्पण करने के लिए बाध्य नहीं करता तो मेरा यह ढाई दिवसीय विजय अभियान सफल नहीं होता। इस विजय का सम्पूर्ण श्रेय आर्यसमाज तथा तत्कालीन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली को है। इस प्रकार सरदार वल्लभभाई भारतीय इतिहास में सदैव अमर बने रहेंगे। उनकी दूरदर्शिता ने राष्ट्र को एक नई ऊर्जा प्रदान की।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के बौद्धिक और

www.thearyasamaj.org

सामाजिक विकास में आर्य महापुरुषों, सत्यार्थ प्रकाश तथा महर्षि दयानन्द के विचारों का महत्वपूर्ण संबंध है। यह स्मरण रखने योग्य तथ्य है कि जब डॉ. भीमराव अम्बेडकर बड़ौदा में प्रशासनिक अधिकारी बनकर आये, तब उन्हें किसी ने भी किराये से कमरा नहीं दिया। वे अपने कार्यालय के ही एक कक्ष में रहने लगे।

उन दिनों बड़ौदा में महाराज गायकवाड़ द्वारा आमंत्रित पंजाब के ला. आत्माराम अमृतसरी प्रभावशाली व्यक्ति थे। संयोग से उनकी भेंट डॉ. भीमराव अम्बेडकर से हो गई। श्री अम्बेडकर जी ने अपने भोजन तथा आवास की समस्या श्री आत्माराम को बताई। श्री अमृतसरी जी महर्षि दयानन्द, वैदिक धर्म तथा आर्यसाज के अनुयायी थे। वे बड़ौदा के तीनों मानसिक प्रवृत्ति तथा धर्म से परिचित थे। उन्होंने अपनी दूरदर्शिता पूर्ण दृष्टि से सारी स्थिति को भांप लिया। इस युवक भीमराव को अपने घर ले गए तथा परिवार का सदस्य मानकर उन्हें प्रारंभिक चिंताओं से मुक्त रखा। ला. अमृतसरी के यहां भोजन-निवास करते हुए वे सत्यार्थ प्रकाश महर्षि दयानन्द तथा समाज सुधार के कार्यों से परिचित हुए। आर्यसमाज के अनुयायी ला. आत्माराम के आदर्शजीवन, धर्म निष्ठा, कर्मठता से डॉ. भीमराव बड़े प्रभावित हुए। वैदिक साहित्य पढ़ने, समझने तथा मनन करने के पश्चात् उनका दृष्टिकोण आर्यसमाज तथा महर्षि दयानन्द के प्रति अत्यन्त श्रद्धापूर्ण हो गया। हिन्दुओं के पौराणिक दृष्टिकोण तथा छुआछूत के विचारों से पूर्ण असहमति रखते हुए उन्होंने पौराणिक हिन्दू धर्म के विरुद्ध बगावत नहीं की। हाँ, उन्होने एक बार यह घोषणा अवश्य की थी - मैं यद्यपि हिन्दू जाति में उत्पन्न हुआ हूँ परन्तु मैं मरते समय अ-हिन्दू रहूंगा। यह घोषणा सत्य सिद्ध हुई।

डॉ. अम्बेडकर की यह ध्रुव धारणा थी कि उत्तर वैदिक काल के अंतिम वर्षों तथा कौरव-पाण्डव के पारिवारिक युद्ध जिसे महाभारत कहा जाता है, के पश्चात् ही इस विशाल आर्य हिन्दू समाज में विकृति आई। इस मध्य युग में ही अनेक पुराण स्मृति तथा गल्प कथाएं प्रचलित की गई कि समाज को उच्च श्रेष्ठ वर्ग अपने को छोड़कर अन्य वर्ण विशेषकर शुद्ध वर्ण तथा स्त्रियों को नरक के द्वार तक कहा है ऐसे आचार्य यह भूल गये कि जिसे जननी मातृशक्ति नारी को हेय बता रहे हैं। उनकी उत्पत्ति भी उसी नारी जाति से हुई है, कैसी कृतज्ञता है यह।

आर्यसमाज के आन्दोलन के द्वारा मध्ययुगीन अनेक मान्यताओं तथा मध्य अरब में उत्पन्न सम्प्रदायों के संबंध में जनसाधारण को जागृत किया। डॉ. अम्बेडकर यह स्वीकार करते थे कि जो मजहब सम्प्रदाय धर्म के नाम विदेशी तीर्थों के प्रति आसक्ति प्रकट करता है, यह राष्ट भक्ति तथा निष्ठा की परिधि में नहीं आ सकता। एक ऐसे विवाद या समस्या है कि डॉ. अम्बेडकर, बौद्धमत को ही क्यों अपनाया, जबकि भारत में इसका अस्तित्व यत्र-तत्र मिलता है। यह सन्तोष का विषय है कि डॉ. अम्बेडकर आजीवन राष्ट्र भक्त, भारत तथा भारतीय संस्कृति के प्रति निष्ठावान बने रहे। नीतिकार के अनुसार यदि वृहत्तर सत्य की रक्षा के लिए अल्प सत्य की उपेक्षा कर दी जाय तो यह क्षम्य है।

स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान के अवसर पर हमें यह दृढ़ संकल्प करना होगा कि हमें अपना प्रत्येक कार्य दूरदर्शितापूर्ण रख कर ही करना चाहिए। हमारे शास्त्रों में कृतज्ञता को अक्षम्य अपराध माना है, इसलिए प्रायश्चित की भी व्यवस्था नहीं है। स्वामी श्रद्धानन्द ने जिस दूरदर्शिता से शुद्धि आन्दोलन प्रारम्भ किया था, उसका सुपरिणाम हमें हमारे पूर्वजों की भूल के कारण देश-विभाजन के समय देखने को मिली। स्वामी जी के इस गुण को सरदार वल्लभभाई पटेल तथा डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने ठीक-ठीक जाना तथा देश हित के उचित कार्यकर राष्ट्र भक्ति का परिचय दिया। इस अवसर पर इन तीनों दिवंगतों को हमारा प्रणाम।

पता : अ/१३, सुदामा नगर, इन्दौर (म.प्र.)

रोटी

भूखे इन्सान के लिए रोटी का स्थान धर्म से कई गुना अधिक महत्व का होता है। ठीक इसी तरह रोटी कानून से भी अधिक महत्व की होती है, जिस पर जान की बाजी लग जाती है। वही रोटी भूखे आदमी को नक्सलवाद या आतंकवाद के रास्ते तक ले जाती है।

www.thearyasamaj.org

सामयिक

बलात्कार के कारण व निवारण

- आचार्य विश्वामित्र 'मुमुक्षुः'

आज संसार में भौतिकता के चकाचौंध में फंस कर मनुष्य अपना सर्वस्व नाश कर रहा है, मूल उद्देश्य की ओर समूचे मानव अनभिज्ञ होते जा रहे हैं। अब मनुष्यों का चित्त केवल भोग पर जा टिका है। आज हर मनुष्य अधिक से अधिक भोग-वासनाओं को भोगना चाहता है। इसके आगे कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य, पुण्य-पाप, लाभ-हानि, मान-अपमान कुछ भी नहीं। वर्तमान युग में हमारे युवा पीढ़ी किस ओर अग्रसर हो रही है।

वैसे तो देखा जाये तो पुरुष का स्त्री के प्रति और स्त्री का पुरुष के प्रति स्वाभाविक रुप से आकर्षण होता है। इस प्रकार की घटनायें इतिहास में भी होती रही हैं। रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्र, गन्दे एसेमेस, अर्द्धनग्न चित्र आदि भी इस प्रकार की घटनाओं को बढ़ावा देते हैं। दूरदर्शन में नग्न चित्र व चलचित्रों में दिखाये जाने वाले दृश्य कामुकता को निमन्त्रण देते हैं। हर युवक के दिमाग में यदि स्वाभाविक रुप से ही काम वासना है तो ये नग्न चित्र निश्चित रुप से अग्नि में पेट्रोल का काम कर रहे हैं। हर मनुष्य के दिमाग में काम की अग्नि विद्यमान है, जिस अग्नि को फिल्म अभिनेता व अभिनेत्री हवा दे रहे हैं और सामूहिक बलात्कार के रुप में धधक कर सामने आ रही है।

बलात्कार का निवारण :- विचार ही मनुष्य को महान् बनाते हैं, तथा विचार ही मनुष्य को पतित बनाते हैं। जो कोई भी गलत कर्म होते हैं वे पहले मन में आते हैं, मन में सदा अच्छे विचार ही हो ऐसी स्थिति बनाना बहुत ही मुश्किल है। अच्छे लोगों की संगति, अच्छे खान-पान, साहित्य, अच्छे चलचित्र, आसन, व्यायाम व प्राणायाम का अभ्यास विचारों को अच्छे बनाते हैं। सहशिक्षा, स्त्री के साथ रहना बातें करना, एसेमेस करना, हंसी मजाक आदि से कामुकता के विचार उत्पन्न होते हैं।

जब कोई युवक किसी युवती को देखता है, तब सोचता है, वह लड़की बहुत ही सुन्दर है, भोग्य है चन्द्रमा को फाड़कर निकली है, इसके शरीर के अंग मधु से बने हैं, इसकी आँख हिरनी जैसी होंठ कमल के पत्ते के सदृश है। इसका स्पर्श करने से स्वर्ग जैसा सुख मिलेगा। इन्हीं विचारों को बार-बार सोचता है और काम की अग्नि में जलने लगता है, अगर युवती नहीं मिली तो आत्महत्या तक कर सकता है। कई लोग बलात्कार करते हैं। परन्तु वही युवक यदि मनुष्य शरीर के वास्तविक स्वरुप पर विचार करे तो निश्चित रुप से घृणा उत्पन्न हो जायेगी। जैसा कि योगदर्शन के अन्दर महर्षि व्यास जी ने मानव शरीर के विषय में लिखते हैं -

स्थानाद्बीजादुपष्टम्भानिन्नः स्यन्दानिन्नधनादपि।
कायमाधेयशौचत्वात् पण्डिता ह्यशुचिं विदुः ।।

योग. व्यास. भा. २.५

० **स्थानात्** - मनुष्य का शरीर गर्भाशय व योनि से उत्पन्न हुआ है, इसलिये शरीर पवित्र नहीं है, क्यों कि गन्दे स्थान से उत्पन्न होने वाला शरीर पवित्र कैसे हो सकता है।

० **बीजात्** - यह शरीर रज व वीर्य से उत्पन्न हुआ है, यदि रज व वीर्य ही पवित्र चीज नहीं है फिर उससे उत्पन्न शरीर पवित्र कैसे हो सकता है। अतः शरीर को पवित्र मानना गलत है।

० **उपष्टम्भात्** - यह शरीर हड्डी, त्वचा, मांस, मेद, मज्जा, वीर्य, रक्त आदि के द्वारा बना हुआ है, इनमें से कोई भी पदार्थ देखने व छूने योग्य नहीं है। यह शरीर तो ऐसा ही है, जैसे कि एक बोरी में कूड़ा, कचरा, गोबर आदि भर दिये जायें और ऊपर से चमकिली पालीथीन लपेट दी जाये। वैसे ही मनुष्य का शरीर है, जो कि हर

www.thearyasamaj.org

मनुष्य को आकर्षित कर लेती है। लेकिन अन्दर झांक कर देखा जाये तो सारा आकर्षण समाप्त हो जाता है।

० **निःस्यन्दात्** - आँख, कान, गला, मुंह, मूत्रेन्द्रिय और गुदा इन्द्रिय के द्वारा सदा मल-मूत्र निकलते रहते हैं। शरीर में अनेकों छिद्रों से निरन्तर पसीना, गन्दगी निकलती रहती है। इन सब गन्दगी को दूर करने के लिये मनुष्य निरन्तर साफ करता है। अतः उपर्युक्त बातों का विचार करने से शरीर के प्रति आसक्ति समाप्त हो जाती है।

० **निधनादपि** - यह मनुष्य का शरीर वृद्ध भी हो जाता है और एक दिन मर कर शरीर नष्ट हो जाता है, चाहे शरीर किसी का भी हो, मर जाने पर कोई छूना नहीं चाहता, यह शरीर सदा रहने वाला नहीं है।

० **कायमाधेयशौचत्वात्** - साफ सफाई ही इस शरीर का आधार है, यदि धोते पोछते रहें तो शरीर की गन्दगी कुछ ओझल रहती है। शरीर में अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते रहते हैं। आयुर्वेद के अन्दर कहा गया है - **"शरीरं व्याधिमन्दिरम्"** अर्थात् शरीर रोगों का घर है कोई न कोई रोग शरीर में रहता है, फिर इस शरीर को पवित्र व आकर्षक कैसे माना जाये, इसलिये ऋषि मुनियों ने इस शरीर को अपवित्र कहा है, यदि मनुष्य शरीर के वास्तविक स्वरुप पर विचार करें तो काम के विचार शिथिल हो जायेंगे जैसा कि (योग. पाद. २.४०) **"शौचात्साङ्गजुगुप्सा परैरसंसर्गः"**. अर्थात् जब योगी मनुष्य की बाह्य तथा आन्तरिक शुद्धि हो जाती है तब वह अपने शरीर से अनासक्त हो जाता है तथा अन्यों के शरीरों से भी सम्पर्क नहीं रखना चाहता है। अतः उपर्युक्त कथनों से सिद्ध होता है कि यह मनुष्य का शरीर केवल भोगों को भोगने के लिये नहीं अपितु धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त करने का साधन है। इसलिए अपने चित्त में सदैव स्मरण करना चाहिए कि मुझे उत्तम शरीर मिला है। इस शरीर का मुझे सदुपयोग करना है। अपने जीवन को सफल बनाना है तभी बलात्कार, चोरी, हत्या आदि जैसे जघन्य अपराधों से बचा जा सकता है।

- पता : महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना, उड़ीसा

सज्जन पुरुषों की एकरूपता

घृष्टं घृष्टं पुनरपि पुनश्चन्दनं चारुगन्धं, छिन्नं छिन्नं पुनरपि पुनः स्वादु चैवेक्षुकाण्डम् ।
दग्धं दग्धं पुनरपि पुनः क ञ्चनं कान्तवर्णं, न प्राणान्ते प्रकृति विकृतिर्जायते चोत्तमानाम् ।।

भावार्थ :- सुख और दुःख जैसे साथ-साथ रहते हैं - तथैव उत्तम और अधम पुरुष भी इस वसुन्धरा पर एक साथ ही रहते हैं। अधम तो अधम रहते ही है - परन्तु सज्जन पुरुष कभी भी किसी भी विपत्ति के आने पर विचलित नहीं होते। दृष्टिक्षेप कीजिए- आप चन्दन को चाहे कितनी ही बार, बारम्बार क्यों नहीं घिसते चले जावें क्या वह अपनी गन्ध छोड़ देगा ? कदापि नहीं। ऐसे ही आप गन्ने को लीजिए। उसके टुकड़े टुकड़े कर डालिए, बारम्बर काटते ही काटते छीलते चले जाइए क्या वह अपने स्वाद बदल देगा ? कभी नहीं, कभी नहीं। वह तो उत्तरोत्तर अपना मधुर स्वाद ही प्रदान करवाएगा।

और सोने को लीजिए - स्वर्ण को अधिक से अधिक अग्नि में तपाइए। क्या वह अपना सोने का रङ्ग गुण छोड़कर ताम्बे या पीतल में कभी परिवर्तित हो जावेगा ? कभी नहीं। सोना-सोना ही रहेगा अपितु वह तो और चमकेगा। इसी प्रकार उत्तम पुरुषों की प्रकृति स्वाभाविक निश्चलता का प्राणान्त होने पर भी परिवर्तन नहीं होता। उनकी एकरूपता जैसी है - सदैव वैसी ही रहेगी।

- सुभाषित सौरभ

www.thearyasamaj.org

आध्यात्मिक नर-देह से व्योम्-देह तक की यात्रा

- महात्मा चैतन्यमुनि

आज यदि हम कहें कि लोगों के पास भौतिक प्रसाधनों की किसी प्रकार की कमी है तो यह बात सत्य नहीं है। आज लोग निश्चित ही भौतिक रूप में पहले से बहुत अधिक समृद्ध हुए हैं। मगर यह भी सत्य है कि धनधान्य प्रचुर मात्रा में होने के बावजूद भी आज मानव पहले से अधिक असुरक्षित और दुःखी है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि व्यक्ति अपनी जीवन पद्धति को पूरी तरह से भूल चुका है। अधिकतर लोग इस बात से ही अनभिज्ञ है कि हमारे जीने का मक़सद क्या है ? और जब यही मालूम नहीं है तो फिर भला जीने के क्या मायने रह जाते हैं ? आप किसी भी व्यक्ति से पूछिए कि भाई साहब आखिर यह सब दौड़-धूप आप किसलिएकर रहे हैं, तो वह इसका कोई भी सही-सही उत्तर नहीं दे सकेगा। यदि आज के मानव से जीने का कारण पूछा जाए तो प्रश्नकर्ता को ऐसे देखेगा मानों उससे कोई बेहद अप्रसांगिक प्रश्न पूछ लिया गया है। आज के मानव की सबसे बड़ी त्रासदी ही यह है कि वह क्यों जी रहा है, उसे सही मालूम नहीं है। हमारे समस्त वेद-शास्त्रों ने इस मानव योनि को बहुत ही महत्वपूर्ण तथा देव दुर्लभ बताया है। वह इसलिए क्योंकि इसी योनि में हम यज्ञ, सत्संग, दान-पुण्य, साधना आदि कर सकते हैं। मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य उपासना करके उस परमपिता परमात्मा के सान्निध्य को प्राप्त करना बताया गया है। यदि इस योनि को भी हम मात्र खाने-पीने, सोने और मौज मस्ती में ही बीता दें तो हममें और पशुओं में कोई अन्तर नहीं रह जाता है। इस योनि को कुकर्मों में बर्बाद करने का हमें कितना बड़ा मूल्य चुकाना पड़ेगा व्यक्ति कभी इस पर भी गंभीरता से विचार ही नहीं करता है। हम उपनिषद् की चेतावनी को भी स्मरण नहीं करते हैं, जहां कहा गया है -

इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति,
नोचेदिहाऽवेदीन्महती विनष्टिः ।
भूतेषु भूतेषु विचिन्त्य धीराः,
प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति ॥ (कैन. उप. २-५)

अर्थात् बुद्धिमान लोग इसी जन्म में उस परमात्मा की खोज करके अमरत्व को प्राप्त हो जाते हैं मगर जो लोग मानव योनि पाकर भी परमात्मा को नहीं जान पाते हैं, उनका तो मानों सर्वनाश ही हो जाता है .. । ऋषि कहते है कि मानव योनि मिली ही परमात्मा की प्राप्ति के लिए और जो इस स्वर्ण अवसर को खो देता है उससे तो यह मानव योनि भी छीन ली जायेगी तथा न जाने कितनी और कैसी-कैसी योनियों में भटकना पड़ेगा। इसलिए नर तन पाकर भी परमात्मा की उपासना न करना तो जैसे अपने पांव पर कुल्हाड़ी मारने जैसा ही है। जिस दिन व्यक्ति इस मानव योनि का महत्व समझ लेगा उसी दिन से उसका जीवन संवरने की दिशा में अग्रसर हो जायेगा। हमें चिन्तन करना चाहिए कि केवल यही वह योनि है जहां पर हमें कर्म करने की स्वतंत्रता प्राप्त है, अन्य सभी योनियां तो मात्र भोग योनियां ही है। अतः हमें इसी मानव-योनि में प्रभु-प्राप्ति का पूरे मन से प्रयास करना चाहिए तथा इसके लिए योग्यता प्राप्त करनी चाहिए। आसन-प्राणायामादि योगांगो का अनुष्ठान करके समाधि तक पहुंचने की योग्यता प्राप्त करने के लिए वेद कहता है -

ओ३म् यदीमृतस्य पयसा पियानो नयन्नृतस्य पथिभिः रजिष्ठैः ।
अर्यमा मित्रो वरूणः परिज्मा त्वचं पृंचन्त्युपरस्य योनौ ॥
(ऋ. १-७९-३)

अर्थात् - जो मनुष्य **(यदीमृतस्य पयसा पियानो)** वेदवाणी रूप गौ के दुग्ध का पान करता है, **(रजिष्ठैः)** ऋजुतम, छल-छिद्र से शून्य अर्थात् सरलता का जीवन जीता है, **(अर्यमा)** कामादि शत्रुओं का नियंत्रण करता है, **(वरुण)** द्वैष का निवारण करता है, **(मित्रः)** सबके साथ स्नेह करता है, **(परिज्मा)** सब क्षेत्रों में अपने कर्त्तव्य का पालन करता है, वही, **(उपरस्य योनौ)** धर्म-

www.thearyasamaj.org

मेध के उत्पत्ति स्थान में **(त्वचं पृंचन्ति)** स्पर्श को प्राप्त करते हैं।

वेद का कहना है कि जो व्यक्ति ऋतस्य-वेदवाणी रुप गौ के दुग्ध पान करता है अर्थात् वेद-स्वाध्याय से 'सत्य-ज्ञान' को प्राप्त करता है, योगमार्ग पर उसकी गति होती है। बहुत से लोग अज्ञानतावश योग-मार्ग पर चल तो पड़ते हैं मगर सत्य-ज्ञान न होने के कारण वर्षो बल्कि कई-कई जन्मों तक भी उन्हें सिद्धि प्राप्त नहीं होती है क्योंकि न तो वे प्रकृति, आत्मा और परमात्मा के मूलभूत स्वरूप को जानते हैं और न ही उपासना की सही विधि को ऐसे अज्ञानी लोग समाधि तक नहीं पहुंच पाते है। दूसरी बात कही, **रजिष्ठैः पथिभिः** जिनका जीवन ऋजुतम, छल-छिद्र से शून्य है अर्थात् जिसका जीवन देवत्व से परिपूर्ण है, जो कुटिलता आदि से दूर रहकर सरलता के मार्ग का पथिक बनता है। आगे कहा **अर्यमा** अर्थात् जो संयमी है। जिसने कामादि शत्रुओं यमों के द्वारा सजा-संवार लिया है और इनका अनुकरण करने से जो सबका मित्रः अर्थात् सबके साथ स्नेह करने वाला बन गया है और परिज्मा **(परितःगन्ता)** पूरी निष्ठा के सात सब क्षेत्रों में अपने कर्त्तव्य का पालन करता है ऐसा व्यक्ति ही धर्म-मेध समाधि को प्राप्त कर सकने में समर्थ हो जाता है। वह प्रभु का प्रिय सखा बन जाता है। वेद में अन्यत्र कहा है -

ओ३म् हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धो-
तावेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।
नृषद्वसरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा
ऋतजा अद्रिजा ऋतम्॥ (ऋ. ४-४०, यजु. १०-२४)

भावार्थ - जो जीव उत्तम गुण, कर्म और स्वभाव वाले ईश्वर की आज्ञा के अनुकूल वर्त्ताव करते है वे ही परमेश्वर के साथ आनन्द को भोगते हैं।

कठोपनिषद् में यमाचार्य आत्मा का उपदेश देते हुए कहते हैं कि जो अजन्मा साधु इस शरीर को ग्यारह द्वारों की नगरी समझकर यह चिन्तन करता है जैसे ये द्वार बाहर को खुलते हैं वैसे ही अन्दर को भी, वह अपने अनुष्ठान से इस संसार में शोक में नहीं पड़ता.. सदा के लिए मुक्त हो जाता है। उपरोक्त वेद का मन्त्र उपनिषद् में आया है (केवल अन्त में 'बृहत' शब्द अधिक है) यमाचार्य कहते हैं कि यह जीवात्मा 'हंस' है, 'वसु' है, होता है और 'अतिथि' है। हंस जिस प्रकार शुद्ध-पवित्र स्थान रहता है, वैसे हंस-रूप जीव भी शुद्ध ब्रह्म में निवास करता है। वसु जैसे अन्तरिक्ष में निवास करते हैं, वसु-रूप जीव हृदय के अन्तरिक्ष में निवास करता है, होता जैसे वेदी के सामने बैठकर अग्निहोत्र करता है, वैसे होतृ-रूप जीव तीनों नचिकेत-अग्नियो को चयन करता है, अतिथि जैसे दुरोण-आश्रम की कुटिया को अपना समझकर नहीं बैठ जाता बल्कि अतिथि के रूप में रहता है, जीव भी इस कुटिया को अर्थात् शरीर को सदा के लिए अपना समझकर नहीं बैठता बल्कि अतिथि बनकर उत्तरोत्तर विकास करता है।

इस तथ्य को इस प्रकार से भी समझा जा सकता है कि अपने इस शरीर-रुपी आवास में वह नर-देह में निवास करता है, नर से अच्छे वर-देह में निवास करता है, उससे भी अच्छे ऋत्-देह में वास करता है और फिर उससे भी उत्कृष्ट व्योम-देह में वास करता है। इस प्रकार वह उत्तरोत्तर विकास करता है। हंसः शुचिसद्-इसे नरदेह कहा गया है। गुरुकुल में ब्रह्मचारी शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्ति तथा ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करते थे, वहीं दूसरी ओर आसन, व्यायाम, प्राणायाम आदि के द्वारा शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता और सत्य, न्याय, दया, संयम, यम-नियम आदि को व्यवहार में लाकर अपनी आत्मा का विकास करके हंस अर्थात् नीर-क्षीर विवेकी हो जाते हैं, वसु अन्तरिक्षसद्-वरदेह, गृहस्थाश्रम जैसे अन्तरिक्ष अपने में अनेक ग्रहों-उपग्रहों को बसाता है वैसे ही गृहस्थ भी अपना एक संसार बसाता है तथा दूसरों को बसाने में भी सहयोग करता है।

गृहस्थाश्रम केवल भोग स्थली नहीं है, बल्कि विवाह-संस्कार के अवसर पर गृहस्थ देश को उत्तम सन्तान देने और धर्मानुसार जीवन यापन करने के लिए पति-पत्नी प्रतिज्ञा लेते हैं, होता वेदिसद्-ऋत्-देह-वानप्रस्थाश्रम। अन्ततः व्यक्ति सांसारिक पदार्थों को त्यागकर अपना जीवन भी समाज को आहुत कर देता है। वह इस विवेक पर पहुंच जाता है कि अध्यात्म ही सत्य है... परोपकार ही धर्म है... इन भावनाओं को आत्मसात् करके वह ऋत् बन जाता है, अतिथि दुरोणसद्-व्योम्-देह-संन्यासश्रम। पच्चहत्तर वर्ष की आयु पूर्ण हो जाने पर व्यक्ति पूर्णतः परमात्मा के प्रति समर्पित

www.thearyasamaj.org

हो जाता है। उनका जीवन मानों प्रभु का ही हो जाता है...भगवे वस्त्र इसीलिये पहने जाते हैं क्योंकि ये ब्रह्माग्नि के प्रतीक है। संन्यासी बनने के बाद व्यक्ति किसी प्रकार की सीमाओं में न बंधकर पूरे संसार का हो जाता है। वह पुत्रैषणा-वित्तैषणा और लोकेषणा से ऊपर उठकर पूर्णरुप से पावन पवित्र हो जाता है... यमाचार्य नचिकेता को वर देते स्वर्ग-साधक अग्नि के सम्बन्ध में कहते हैं -

त्रिणाचिकेतस्त्रिभिरेत्य संन्धि
त्रिकर्मकृत्तरति जन्ममृत्यु।
ब्रह्मजज्ञं देवमीडयं विदित्वा
निच्चाय्येमाँ शान्तिमत्यन्तमेति ॥
त्रिणाचिकेतस्त्रयमेतद्विदित्वा य
एवंविद्वाँश्चिनुते नचिकेतम्।
स मृत्युपाशान्पुरतः प्रणोद्य शोकातिगो
मोदते स्वर्गलोके ॥ (कठो. १-१७-१८)

अर्थात् जो ब्रह्मचर्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ इन तीन आश्रमों में उपासना करेगा वह तीनों सन्धियों में से गुजरकर, तीनों कर्मों को करके, जन्म और मृत्यु को तर जाएगा। इन तीन सन्धियों से गुजरकर जो क्रम बनता है वह 'ब्रह्म-यज्ञ' कहलाता है। जो व्यक्ति दिव्यगुणों से युक्त, स्तुति के योग्य 'ब्रह्म-यज्ञ' को जान जाता है वह अत्यन्त शान्ति को प्राप्त होता है। तीनों नचिकेत अग्नियों को जो इस प्रकार जान जाता है और नचिकेत अग्नि का चयन करता है, वह आगे से मृत्यु के पाशों को काटकर, शोक से पार होकर, स्वर्ग-लोक में आनन्द से रहता है। यही तीनों अग्नियों की सन्धियाँ है, जिनसे जीवात्मा अपने यथार्थ को प्राप्त कर लेता है ...।

पता : महर्षि दयानन्द धाम, महादेव, सुन्दरपुर, जिला-मण्डी हि.प्र.-१७४४०१

सत्य का व्रत लेता हूँ

- महात्मा चैतन्यमुनि

हे पाप-पंक को भस्म करने वाले अग्ने कृपा करो।
हे व्रतो के पालक व्रतपते मुझ पर कृपा करो ॥
मैं भी व्रतों का पालक व धारक बन सकूँ पिता,
हे देव ! मैं भी सत्य का उपासक बन सकूँ सविता ॥

❀

हे प्रभो ! मुझमें तेरे बिना गिरावट आ जाती है,
लाख यत्न करने पर भी रुकावट आ जाती है।
असहाय सा होकर फिर प्रभु आपको पुकारता हूँ,
व्रतों में दृढ़ता आ सके आपको निहारता हूँ ॥

आज आपके समक्ष सत्य का व्रत लेता हूँ व्रतपते,
अनृत त्यागने का दृढ़ संकल्प लेता हूँ व्रतपते।
तुम्हारे स्वामित्व में ही अब सत्याचरण करूंगा,
स्वप्न में भी अब न कभी मैं असत्याचरण करूंगा ॥

❀

आशीर्वाद दो मेरा यह व्रत सफल हो सके,
मेरा यह अस्थिर मन पवित्र और अचल हो सके।
कृपा करो दयालु भगवन्, चैतन्य सिद्धि पा सकूँ,
वर दो पिता पाप छोड़ पुण्य में वृद्धि पा सकूँ ॥

पता : महर्षि दयानन्द धाम, महादेव, सुन्दरपुर, जिला-मण्डी हि.प्र.-१७४४०१

मध्य भारत में प्रथम बार

आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन इन्दौर में

दि. १९ जनवरी २०१४, रविवार प्रातः १० बजे से आर्यसमाज मल्हार, इन्दौर (मध्यप्रदेश)

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क : राष्ट्रीय संयोजक - श्री अर्जुनदेव चड्ढा, मोबा. ०९४१४१८७४२८

www.thearyasamaj.org

सराहनीय कदम

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्षों के प्रयास से

दिल्ली हाईकोर्ट ने लगाई आर्यसमाज के नाम पर चल रही नकली संस्थाओं में विवाहों पर रोक

दिल्ली उच्च न्यायालय ने आज यमुना बाजार आदि स्थानों पर स्थित नकली आर्यसमाजों में अवैध रुप से हो रहे विवाहों पर सर्टिफिकेट जारी करने पर रोक लगा दी है। जस्टिस हीमा कोहली जी ने दिल्ली हाईकोर्ट में आजं केस नम्बर (W.P.(C.R.L.) १५८३/२०१० में सुनवाई के दौरान दिल्ली की आर्यसमाजों की शिरोमणि संस्था **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नईदिल्ली** के प्रार्थना पत्र पर विचार करते हुए, भारत के संविधान के अधिनियम **आर्य विवाह विधि मान्य अधिनियम १९३७** का हवाला देते हुए, उक्त आदेश पारित किया, जिसके आधार पर अब नकली आर्यसमाजें विवाह नहीं कर सकेंगी तथा इससे युवाओं की भावनाओं का लाभ उठाकर कुछ लोग जो शोषण किया करते थे, उस पर रोक लगेगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने कहा कि दिल्ली में जिन आर्यसमाजों के मन्दिरों में विधिपूर्वक संविधान अनुसार विवाह कराने की व्यवस्था है तथा समस्त कार्यवाही पूरा करने के पश्चात् प्रमाण-पत्र जारी किया जाता है उनकी सूची सभा की वेबसाइट **www.thearyasamaj.org** पर प्रदर्शित की गई है। उन्होने आम जनता से आग्रह किया कि इस बारे में सभी को जागरुक करें। आदेश की पूर्ण प्रति जल्दी ही सभा की वेबसाइट पर भी देखी जा सकेगी।

ज्ञातव्य हो कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों का प्रतिनिधित्व करने वाली शिरोमणि नियन्त्रक संस्था है। दिल्ली की समस्त आर्यसमाजें इससे संबंधित होकर कार्य करती है। लम्बे समय से कुछ लोग आर्यसमाज के नाम पर विवाह कराने का अवैध कार्य कर रहे थे। जिस पर रोक लगाने के लिए सभा काफी समय से प्रयासरत थी। नकली आर्यसमाजें गलत तरीके और बिना कागजी कार्यवाही पूरी किये केवल धन के लालच में विवाह कराने का कार्य कर रही थी जिससे सामाजिक कार्य करने वाली विश्वविख्यात संस्था आर्यसमाज की छबि खराब होती थी। यह रोक अगले आदेश तक जारी रहेगी तथा अभी न्यायालय में सुनवाई आगे चलेगी।

साभार : आर्य प्रतिनिधि रोहतक (हरियाणा का मुख पत्र), दिनांक २१-१०-२०१३

www.thearyasamaj.org

ऐतिहासिक "देश के चार महान् राजनीतिज्ञ"

खुशहालचन्द्र आर्य

जब हम अपने प्यारे देश भारत के अतीत का उज्ज्वल इतिहास का अवलोकन करते हैं तो हमें चार राजनीतिज्ञों का दिग्दर्शन होता है। जो भारत के नभ-मण्डल में अपनी तेजस्विता के कारण दैदिप्यमान है। उनके नाम हैं (१) भगवान श्रीकृष्ण (२) आचार्य चाणक्य (३) महाराजा शेर शिवाजी (४) सरदार वल्लभभाई पटेल। इन चारों का यहां पर संक्षिप्त परिचय देने जा रहे हैं, जो इसी भांति है।

(१) भगवान श्रीकृष्ण :- ये एक महान् योद्धा बलवान, कुशाग्र, बुद्धिमान, साहसी व धैर्यवान तो थे ही साथ ही एक महान् राजनीतिज्ञ भी थे। महाभारत में कौरवों की तरफ महान योद्धा दादा भीष्म (महारथी), गुरु द्रोणाचार्य, गुरु कृपाचार्य व कर्ण जैसे महारथी होने के बाद तथा साथ ही एक विशाल ग्यारह अक्षौणी सेना के होने पर भगवान श्रीकृष्ण की कुशल राजनीति ही थी जिसके कारण पाण्डवों का कमजोर पक्ष होते हुए भी उनको विजय दिलवाई। इस विजय का पूरा श्रेय भगवान श्रीकृष्ण को जाता है। महाभारत में एक नहीं अनेक ऐसे स्थल आते हैं, यदि उस समय श्रीकृष्ण अपनी बुद्धिमत्ता न दिखाते तो पाण्डवों का विजयी होना असम्भव ही था। कर्ण,अर्जुन से हर हाल में अधिक बलशाली था। उसका रथ कीचड़ में फंस जाने पर कर्ण को मारने का संकेत देना, अर्जुन द्वारा जयद्रथ को सूर्य छिपने से पहले मारने की प्रतिज्ञा को सफल बनाना, दादा भीष्म व गुरु द्रौणाचार्य को मारने की युक्ति बताना, दुर्योधन की जांघ पर भीम द्वारा प्रहार करवाना आदि सामयिक कार्य करवाना श्रीकृष्ण की ही बुद्धिमता थी, जिसके कारण पाण्डवों को विजय प्राप्त हुई। श्रीकृष्ण एक अद्वितीय महापुरुष थे, उनमें आपत्तियों से निकलने की अद्भुत क्षमता थी, जिसके कारण वे हारी बाजी को जीत लेते थे। वे वेदों के भी प्रकाण्ड विद्वान् थे, तभी तो वे गीता ज्ञान देकर अर्जुन का मोह भंग करवा कर युद्ध के लिए तैयार कर सके। भगवान श्रीकृष्ण का धर्म, अन्य धर्माधिकारियों की तरह अहिंसा परमो धर्मः वाला धर्म नहीं थ। उनका धर्म, पापियों, दुष्टों को छल, बल आदि किसी भी तरह मार देना ही धर्म था, उनका कहना था कि जो पापी का साथ देता है, वह भी पापी है, उनको मारना भी धर्म है इसीलिए दुर्योधन पापी का साथ देने वाले दादा भीष्म गुरु द्रौणाचार्य, गुरु कृपाचार्य व कर्ण जैसे लोगों को पापी समझकर ही मरवाया। श्रीकृष्ण की राजनीति केवल सराहनीय ही नहीं बल्कि अनुकरणीय भी है।

(२) आचार्य चाणक्य :- भारत के इतिहास में राजनीति में दूसरा स्थान आता है आचार्य चाणक्य का। ये भी एक विलक्षण बुद्धि के राजनीतिज्ञ थे। जब अवध का अन्यायी राजा महानन्द ने अपने मंत्री चाणक्य का अपमान करके उसको अपने महल से निकाल दिया। तब महापण्डित चाणक्य ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं महानन्द के इतने बड़े साम्राज्य को नष्ट करके ही दम लूंगा और उसने वैसा ही कर दिखाया। चाणक्य एक बड़े दूरदर्शी व्यक्ति थे। जब उसने राजमहल के बाहर ही महाराजा की दईया मूरी का एक होनहार लड़का जिसका नाम चन्द्रगुप्त था, अपने साथियों के साथ खेल रहा था और वह राजा का पार्ट लेकर खेल रहा था। चाणक्य की दूरददर्शी बुद्धि ने जान लिया कि यह बालक विलक्षण बुद्धि का है, यदि इसको शस्त्र विद्या सिखा दी जाये तो इसके द्वारा मैं महानन्द को परास्त कर सकता हूँ और ऐसा ही करके चन्द्रगुप्त द्वारा महानन्द को परास्त किया और उसके साम्राज्य का विनाश करके चन्द्रगुप्त को सम्राट बना दिया और स्वयं अवध राज्य का महामंत्री बनकर जंगल में एक कुटिया में एक तपस्वी जीवन बनाकर रहने लगा। उसी कुटिया में रहकर पूरे साम्राज्य की देखभाल करने लगा। राज्य की व्यवस्था इतनी बढ़िया व सुदृढ़ थी कि कोई भी राजा चन्द्रगुप्त के राज्य की तरफ आँख उठाकर देखने का भी दुस्साहस नहीं कर सकता था। चाणक्य ने एक चाणक्य-नीति पुस्तक भी लिखी, जिसको पढ़कर लोग आश्चर्य चकित हो जाते हैं। चाणक्य जैसा बुद्धिमान, राजनीतिज्ञ, चरित्रवान् व राष्ट्रहित के प्रति समर्पित भाव वाले व्यक्ति भारत के इतिहास में ढूंढने से भी बहुत कम मिलते हैं।

उसके महामंत्री काल में जनता पूर्ण सुखी व आनन्दित थी। कहा जाता है कि जिस राज्य का मंत्री जंगल

www.thearyasamaj.org

में कुटिया बनाकर रहेगा, तो उसकी जनता महलों में आनन्द की नींद सोवेगी और जिस राज्य का मन्त्री महलों में ऐश करेगा, उसकी जनता झोपड़ियों में रहकर दुःखी जीवन व्यतीत करेगी। इस बात को चाणक्य ने चरितार्थ करके दिखा दिया। आज के शासक व मंत्री महलों में व फाईव स्टार होटलों में रहते हैं, तभी आज की जनता दुःखी है। उन्हें आतंकवादियों का भय और महंगाई की मार सहनी पड़ रही है। उनको चाणक्य के जीवन से शिक्षा लेनी चाहिए।

(३) शेर शिवाजी :- भारत के इतिहास में राजनीति के क्षेत्र में शेर शिवाजी महाराज का भी एक विशेष महत्वपूर्ण स्थान है। वे भी एक अद्वितीय साहसी और विलक्षण बुद्धि के राजनीतिज्ञ थे। इसीलिए वे एक साधारण छोटे से राज.य के राजा होकर औरंगजेब जैसे अन्यायी, बड़े राज्य से टक्कर लेने में सफल हो सके। उसकी माता जीजाबाई एक धार्मिक और राष्ट्र प्रेम से ओतप्रोत भाव की विदुषी महिला थी, जिसने अपने पुत्र शिवा को बचपन में ही अच्छी-अच्छी धार्मिक व वीरता की कहानियां सुना-सुनाकर उसे एक देशभक्त राजा बना दिया। शिवा जी ने अपनी गतिविधियों से औरंगजेब की नींद हराम कर रखी थी। औरंगजेब उसे पकड़ने की जितनी भी चालें चलता था, शिवाजी उन्हें निष्फल कर देता था और उसकी पकड़ में नहीं आता था। एक बार औरंगजेब ने अफजल खाँ को शिवाजी से संधि करने भेजा, यह भी उसकी चालाकी थी जिसे शिवा जी ने नाकाम कर दिया और अफजल खाँ के चुगंल से निकल गया। एक बार शिवाजी औरंगजेब की पकड़ में आ गया और जेल में डाल दिया, पर शिवाजी जेल में ऐसी चतुरता से निकल गया कि औरंगजेब को पता भी नहीं लगा। शिवाजी अपने छोटे से राज्य को हिन्दू राज्य घोषित करके इतना सुंदर ढंग से राज्य चलाया जो भारत के इतिहास में एक उदाहरण बन गया।

(४) लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल :- सरदार पटेल आधुनिक समय के श्रीकृष्ण कहलाते थे। जिस प्रकार श्रीकृष्ण ने खण्डित भारत को संगठित करके महाभारत बनाया, उसी प्रकार सरदार पटेल ने ५२२ रियासतों को मिलाकर एक विशाल भारत बनाया। सरदार पटेल की विलक्षण बुद्धि, दृढ़ निश्चय, अपरिमित साहस, संगठन शक्ति को देखकर ही जनता ने उन्हें लौह पुरुष की उपाधि से विभूषित किया। सरदार पटेल एक ऐसा दृढ़ विश्वासी व्यक्ति था जिसने जो काम करना ठान लिया, उसे पूरा करके ही रहा।

अंग्रेजों ने हमें १५ अगस्त १९४७ को आजादी तो जरुर दी, परन्तु वह अधूरी आजादी थी। उस अधूरी आजादी को पूर्ण आजादी में परिवर्तित करने का श्रेय सरदार पटेल को ही जाता है। अंग्रेज जब भारत छोड़कर गये थे, तब भारत में ५२२ देशी रियासतें व रजवाड़े थे। वे सभी को स्वतंत्र छोड़कर गये थे। सभी रियासते चाहे तो भारत में मिले या चाहे पाकिस्तान में मिले या स्वतंत्र रहे। सब छूट देकर गये थे। वे तो वही उम्मीद रख कर गये थे कि ५२२ रियासतों व रजवाड़ों को भारत कभी भी नहीं मिला सकेगा और परस्पर लड़ाई-झगड़ा चलता रहेगा, जिससे देश में अशान्ति बनी रहेगी। अन्त में हम ही आकर राज्य सम्भालेंगे, पर सरदार पटेल ने उनकी उम्मीदों पर पानी फेर दिया। पटेल जी ने इतनी होशियारी व चातुर्य से सब राजाओं को समझाकर, डराकर या किसी से युद्ध करके सबको भारत में मिला लिया। जूनागढ़ व ग्वालियर महाराजा ने कुछ आना-कानी की थी, परन्तु उनको भी समझा-बुझाकर मना लिया। केवल हैदराबाद का बादशाह नहीं मिलना चाहता था। उसको भी सेना भेजकर चार घन्टों में ही भारत में मिला लिया। अब केवल कश्मीर की एक समस्या रह गई। जब पाकिस्तान ने कश्मीर पर चढ़ाई कर दी और दो तिहाई हिस्सा कश्मीर का जीत लिया, तभी नेहरु ने बीच में टांग लगाकर सेना को आगे बढ़ाने से रोक दिया और कश्मीर की समस्या जहां की तहां रख कर राष्ट्र संघ में दे दिया, जिससे आज भी कश्मीर का एक तिहाई हिस्सा सिर दर्द बना हुआ है। यदि नेहरु जी टांग नहीं लगाते तो कश्मीर की समस्या भी हल हो गई होती और आज भारत विश्व में मजबूत और सुदृढ़ देशों में गिना जाता। आज हमें पाकिस्तान जैसा छोटा देश भी आँख दिखा रहा है। यदि कश्मीर समस्या हल हो जाती तो चीन और अमेरिका भी हमें आंखे नहीं दिखा सकते और भारत एक सुदृढ़ राष्ट्र के रुप में खड़ा हुआ दिखता औह हम सभी भारतवासी सुख और आनन्द की नींद सोते। काश ! ऐसा हुआ होता।

पता :- गोविंदराम आर्य एंड संस, १८० महात्मा गांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-७००००७

www.thearyasamaj.org

प्रेरणात्मक

करुणामूर्ति दयानन्द

- प्रोफे. मोनिका आर्य

महर्षि दयानन्द के मन्तव्य और सत्यार्थ प्रकाश :

सत्यार्थ प्रकाश को आर्यसमाज का बाइबिल कहा गया है। हम भले ही इस उपमा से असहमत हों किन्तु इसका अभिप्राय यही है कि आर्यसमाज की समस्त मान्यताओं, विचारों और चिंतन का मूल स्रोत यद्यपि वेद हैं किन्तु वेदानुकूल होते हुए आज हम सत्यार्थ प्रकाश को ही अपना प्रामाणिक ग्रन्थ मानते हैं। कुछ लोग मानते हैं कि सत्यार्थ प्रकाश अत्यंत रुक्ष और तार्किक ग्रन्थ हैं। इसमें भावनाओं का कोई मूल्य नहीं है। मैं इस बात से कुछ अंशों में असहमत हूँ। भावनाओं के बिना किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व निखर नहीं सकता। उत्तर राम चरित में भवभूति ने स्पष्ट रुप से लिखा है कि जो लोकोत्तर महापुरुष होते हैं वे अत्यंत कठोर और अतिमृदुल हृंदय वाले होते हैं। आजकल आर्यसमाज में महर्षि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ने पर बड़ा जोर दिया जाता है इसलिए उनके व्यक्तित्व को समझना बहुत ही मुश्किल होते हैं -

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।
लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हति ॥

महर्षि दयानन्द की तार्किकता की हमेशा चर्चा होती है। उनकी भावुकता को बहुत ही कम लोग समझ पाते हैं। मुझे स्मरण आता है मेरे गुरुदेव पूज्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी (गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ) ने बहुत पहले ही एक लेख **"भावुक भक्त दयानन्द"** लिखा था। उन्होंने अपने लेख में बताया था कि वह दयानन्द जो अत्यंत कठोर होकर पोपलीला का चक्र रचने वाले पुराणकारों के गर्भ में ही मर जाने की कामना करते हैं वहीं दयानन्द विधवा स्त्री की दयनीय दशा को देखकर रातभर रोते रहते हैं। महर्षि का जीवन सचमुच भवभूति के शब्दों में ***"वज्र सा कठोर और पुष्प सा कोमल था।"***

महर्षि दयानन्द सरस्वती के ग्रंथों का आलोडन करने से पता चलता है कि महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश की जब रचना की तबका युग शास्त्रार्थ का युग था। उस युग में स्वयं को स्थापित करने रुक्ष से लगने वाले तर्क की महती आवश्यकता थी। महर्षि दयानन्द का व्यक्तित्व भावनाओं और संवेदनाओं से भरा हुआ था। यही कारण था कि योगी होते हुए भी वे संसार से विमुख नहीं हुए। उन्होंने सम्पूर्ण जगत् को भय, भूख और व्याधि से विमुख करने के लिए सामाजिक चेतना का कार्य प्रारंभ किया। महर्षि के सामाजिक कार्य उनके कारुणिक हृदय से ही स्फुरित हुए थे। यहां महर्षि के करुणहृदयता के प्रमाण के लिए कुछ घटनाएं प्रस्तुत है -

सबके स्वामी जी :- एक हृष्ट पुष्ट गठीले बदन का काषाय वस्त्रधारी संत गंगा के किनारे आत्म चिंतन में रत था। जीवन की जटिलता और जीवन के पार की कथाओं को समझने की कोशिश कर रहा था। गंगा के तट पर वह हिमालय की अडिगता और शान्त तपोमय जीवन का अनुभव करने की कोशिश कर रहा था। वह योगी जितनी समस्या को सुलझाने की कोशिश कर रहा था, उतना ही उलझता जा रहा था। उसने वेद में कहीं पढ़ा था कि उत्तुंग पर्वत शिखरों तथा नदी के जल के समीप ही बोध का मार्ग प्रशस्त होता है। शायद इसीलिये ज्ञान साधना के अनेक केन्द्र तथा आश्रम ऋषि-मुनियों ने पर्वत शिखरों के समीप नदियों की कलकल करती धारा के आंचल में ही बसाये थे।

वह योगी जानना चाहता था कि श्रेय तथा प्रेय मार्ग में कौन सा मार्ग श्रेष्ठ है। वह वैयक्तिक साधना के पथ पर आगे बढ़े या फिर समग्र जगत की चिंता में डूबे। संघर्ष करे या हिमालय की शांति के साथ अपनी मुमुक्षा को शान्त करें।

वह उस गंगा की धारा को बड़े ही ध्यान से देख रहा था। गंगा जिस हिमालय से निकली थी वह कितना शान्त और अडिग था। उसकी गोद में प्रलय मचा देने वाली गंगा, यमुना, भागीरथी, अलखनंदा जैसी कितनी नदियाँ उछलती

www.thearyasamaj.org

कूदतीं है। योगी का चित्त हिमालय की ओर जा रहा था। हिमालय में योगियों का संग उन्होंने किया था। योगी दुनिया की उथल-पुथल से दूर शान्त और अविचल चित्त के साथ परमात्मा के ध्यान में लगे हुए। कामना, वासना से विरत होकर निर्विकल्प समाधि का आनन्द उन्होंने लिया था। वही स्वाद गंगा की कलकल करती धारा की ध्वनियों के साथ उनके मन को बार बार आकृष्ट कर रहा था। वे एक बार हिमालय को देखते तो एक बार गंगा को। गंगा बहुत ही बेचैन होकर कहीं दौड़ी चली जा रही थी। उसके जल का प्रवाह, उसकी गति उसके मन की बेचैनी को मुखर कर रहा था। वह किसी के रोके नहीं रुकती थी। बड़े-बड़े चट्टानों, बड़े-बड़े पेड़ों को उसने अपना रास्ता रोकने के अपराध की सजा सुना दी थी। वह पूरी जान लगाकर दौड़ी चली जा रही थी। वह तभी रुकती है जब वह अपने गंतव्य तक पहुंच जाती है, मंजिल को हासिल कर लेती है। गंगा सागर में समाहित होकर ही चैन की सांस लेती है। जब तक लक्ष्य को हासिल करने के लिये मन इतना विह्वल इतना बेचैन नहीं होता जीवन में बड़े लक्ष्य तक पहुंचा नहीं जा सकता। यह बेचैनी ही हमारे संकल्प को बल देती है। योगी के दिल में एक ओर गंगा की कल-कल थी तो दूसरी ओर हिमालय का निमंत्रण। इन्हीं विचारों में खोये वे बढ़े जा रहे थे। सहसा विचारों की गंगा किसी बड़े पर्वत से टकरा गई। लगा कि जैसे किसी ने गंगा को बांध लिया हो।

योगी ने देखा कि एक विधवा स्त्री गंगा के किनारे विलाप करती हुई आगे बढ़ रही है। वह रुक-रुक कर अपनी नियती को कोस रही थी। उसका मुख उसकी अश्रुधारा से मलिन हो रहा था। दुःख भरी पीड़ा ने यौवन के तेज को हर लिया था। उस विधवा स्त्री के हाथों में शव था। शायद वह उस शव को प्रवाहित करने के लिए गंगा के तट पर आई थी। एक मां के हाथों में पुत्र का शव सोचकर ही मन विदीर्ण हो जाता है। वह उसी पीड़ा को अपने आंचल में समेटे गंगा के सहारे विधाता से शिकायत कर रही थी। दिल पर पत्थर रखकर उस मां ने पुत्र के शव को गंगा में बहाया। किन्तु यह क्या ? उसने उस शव का कफन उतार लिया।

योगी इस दृश्य को ध्यान से देख रहे थे। वह उस माता के निकट पहुंचे। उसने उससे सवाल किया। आपने भारी मन से शव को बहाया मैं आपकी पीड़ा को समझ सकता हूँ, किन्तु, आपने शव का कफन क्यों उतार लिया ? उस स्त्री के आंसू झर-झर झरने लगे। उसकी बेबसी धैर्य के बांध को तोड़कर आगे बढ़ गई थी। वह अत्यंत कारुणिक स्वर में बोली क्या आप एक विधवा स्त्री की बेचारगी को समझ सकेंगे ? मेरा वैधव्य ही मेरा अभिशाप है। मुझे समाज ने ऐसा जीवन दिया है, जहां कुलक्षिणी कहकर पल-पल मेरा अपमान किया जाता है। मौत से बदतर जिन्दगी है मेरी। हमें तो अब मौत से बदतर जिन्दगी लगने लगी है। समाज ने न तो खाने पहनने का सुख दिया न ही कोई आसरा। मैं अपने मृत बेटे को कफन भी नहीं दे पा रही हूँ। उसका तन ढंकने से ज्यादा अपनी इज्जत को बचाना जरुरी है। क्या करूँ क्या नहीं ? सारे धर्माधिकारी शास्त्रों का हवाला देकर हम पर अत्याचार की वकालत करते हैं। चना, चबेना और अनेक गालियां खाकर जिन्दा हैं। जीवन की प्रत्येक खुशी से हमें दूर कर दिया गया है।

योगी का हृदय फट गया। उसे नियती ने उसके जीवन का लक्ष्य दे दिया था। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि अब धर्मशास्त्र के नाम पर कोई नारी पर अत्याचार नहीं कर सकेगा। ऋषि-मुनियों के अनेक शास्त्रों के आधार पर उन्होंने बताया कि **मातृदेवो भव** माता आराध्य देव है। यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहां देवों का वास होता है।

हिमालय की ओर मुड़ता करुण हृदय गंगा की ओर मुड़ गया। योगी ने प्रण किया कि तथाकथित शास्त्रों के नाम पर अब नारी पर अत्याचार नहीं होने देंगे। उन्होंने वेद की उन पावन ऋचाओं को दुनिया के सामने रखा जहां नारी की गाथा का बखान हो रहा था। उन्होंने प्रण किया कि अब गंगा की पावन निर्मल धारा की भांति वे भी जगत का कूड़ा, कचरा उसकी मलीनता को दूर करके उसे निर्मल करेंगे। उन्हें नियती ने एक बड़ा दायित्व दे दिया था।

वे अपने व्याख्यानों में मदालसा, गार्गी, द्रोपदी, सीता, कैकयी, यशोदा, रुक्मणि, मन्दोदरी जैसी अनेक

www.thearyasamaj.org

सुशिक्षा नारियों की गरिमा तथा उनके उच्च चरित्र तथा ज्ञान का बखान किया। आगे चलकर महर्षि के अनुयायियों ने नारी शिक्षा के लिये एक बड़ा आन्दोलन खड़ा किया। नारी-शिक्षा के लिये किए गए उनके प्रयासों को इतिहास कभी भी भूला नहीं सकता। भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कहा था कि आज अगर वे देश का नेतृत्व कर प्रधानमंत्री बनीं है तो इसका पूरा श्रेय महर्षि दयानन्द जी को ही जाता है। स्वामी श्रद्धानन्द सहित आर्यसमाज के अनेक समाज सुधारकों ने नारी का गौरव बढ़ाने उन्हें शिक्षित करने का बीड़ा उठाया था। महर्षि मानते थे कि नारी ही समाज की रीढ़ है, इसे सुसंस्कृत सुशिक्षित बनाये बगैर समाज का उद्धार नहीं किया जा सकता।

सत्य के प्रति अनुराग और ईश्वर पर अटूट आस्था :- स्वामी जी राजस्थान की यात्रा पर थे। अनेक राजाओं को उन्होंने उपदेश दिये। स्वामी जी के उपदेश से कई राजाओं ने तो अपना जीवन भी बदल दिया था। स्वामी जी की जीवनी में उल्लेख है कि अनेक राजा महाराजा स्वामी जी से परामर्श लेते थे। कई राजाओं ने तो अपने लिए आदर्श जीवन चर्या भी स्वामी जी से बनवाई थी। ये भक्त राजा उसी दिनचर्या के अनुसार जीवन यापन भी करते थे।

स्वामी जी ने राजस्थान में जाकर राजाओं को उपदेश देना शुरु किया। उनका मानना था कि एक राजा के सुधरने से पूरी प्रजा का उद्धार हो जाता है। महाराज के विचारों, उनकी मेधा का कोई जवाब किसी के पास नहीं था। राजा स्वामी जी के तेज और ब्रह्मचर्य का प्रताप देखकर प्रभावित थे। उनके विचारों का सम्मान करते हुए भी कई राजा अपनी परम्परा से विपरीत जाने का साहस नहीं कर पा रहे थे। राजा ने स्वामी जी से आग्रह किया कि वे उनके मन्तव्यों को स्वीकार करते हैं किन्तु परम्पराओं को छोड़ पाना मुश्किल है। उन्होंने कहा कि महाराज आप मूर्तिपूजा तथा श्राद्ध जैसी प्रचलित परम्परा का विरोध न किया करें।

स्वामी जी ने कहा कि मैं ईश्वर प्रदत्त वेद को ही प्रमाण मानता हूँ। उसी के आधार पर मैं वेदमत का प्रचार कर रहा हूं। राजा ने उन्हें अपना राजपुरोहित नियुक्त करने का लोभ दिखाया। स्वामी जी किसी भी कीमत पर सत्य से विमुख होने को तैयार नहीं थे। राजा ने पहले कुछ गाँव और फिर आधा राज्य तक देने की पेशकश की स्वामी जी से रहा नहीं गया वे क्रोधित हो गए। उन्होंने कहा कि राजन बताओ तुम्हारा राज्य कितना बड़ा है ? मैं अभी अगर दौड़ लगाना आरम्भ करूँ तो कल तक आपके राज्य से बाहर होऊंगा। उस परमात्मा के राज्य की विराटता को देखिए आज तो क्या मैं अगर जीवन भर भी भागता रहूँ तो उसके राज्य से बाहर नहीं हो सकता। राजन आप ही बताएं मैं आपकी मानूं या राजाओं के राजा उस परमात्मा को मानूं, जिसका अनंत राज्य है। जो हजारों आंखों से देखता है और हजार पावों से चलता है। स्वामी जी की बात सुनकर राजा का दंभ चूर हो गया। उन्होंने अपना सिर झुका लिया। उन्होंने इसके बाद कभी स्वामी जी से ऐसी बात नहीं कही। यह घटना महर्षि के निर्लोभ चित्त तथा उनकी ईश्वरनिष्ठा का प्रमाण है। स्वामी जी कहा करते थे कि आस्तिकता ही व्यक्ति को निडर बनाती है।

शेष अगले अंक में ....

पता : बी.आई.टी. दुर्ग (छ.ग.)

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में बोधोत्सव का आयोजन

आर्यजनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर **भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन बुधवार, वीरवार, शुक्रवार, २६, २७, २८ फरवरी २०१४** को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप ये तिथियाँ अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्यसमाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्यजनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

निवेदक : रामनाथ सहगल, मंत्री

www.thearyasamaj.org

पुण्य स्मरण

पण्डित काशीनाथ शास्त्री

- डॉ. अशोक आर्य

पण्डित काशीनाथ शास्त्री आर्यसमाज के उच्च कोटि के लेखकों व प्रचारकों में से एक थे। आप अपने जीवन का एक एक पल आर्यसमाज के प्रचार व प्रसार के लिए ही लगाया करते थे। आपका जन्म गांव कोडा जहानाबाद जिला फतेहपुर में दिनांक १ मई १९११ इस्वी को हुआ था। आपके पिता श्री रघुनाथ जी थे। पण्डित जी के पिता जी अनुरुप ही अटूट सिद्धान्तवादी व आर्यसमाजी थे। पिता के विचारों का ही आप पर प्रभाव था, जिसके कारण आप न केवल आर्य हुए बल्कि सिद्धान्तवादी आर्यसमाजी हुए तथा आर्य समाज के लिए कोई भी कुर्बानी देने के लिए तैयार रहते थे। अपने व्यवसाय के निमित आप फतेहपुर छोड़कर गोंदिया (महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र) में चले गए। गोंदिया में आप आर्यसमाज के स्तम्भ थे तथा यहां रहते हुए आपने चिकित्सा का कार्य आरम्भ किया तथा इस व्यवसाय में ही आजीवन निर्वहन करते रहे।

आपके नाम के साथ जो शास्त्री शब्द जुड़ा है, उससे स्पष्ट है कि शास्त्री तो आपने उत्तीर्ण की ही थी, किन्तु गोंदिया आने के पश्चात आपने नागपुर विश्वविद्यालय से एम.ए. की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। इससे पता चलता है कि उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए आप निरन्तर प्रयत्नशील रहे।

आर्यसमाज मध्यप्रदेश व विदर्भ का कार्यालय नागपुर में है इसका मुख पत्र आर्यसेवक भी यहां से निकलता है। इस पत्र के सम्पादक का कार्य आर्यसमाज के उच्च कोटि के आर्य रहे हैं। हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान के पति भी इस पत्रिका के सम्पादक रहे हैं। हमारे पण्डित काशीनाथ शास्त्री भी अपनी उच्च हिन्दी व आर्य समाज सम्बन्धी योग्यता के कारण इस पत्र के सम्पादक रहे तथा इस पत्र को बहुत आगे ले गये। आपको आर्यसमाज से इतनी लगन थी कि आर्यसमाज के प्रचार प्रसार के कार्य के लिए सभा की योजना के अनुरुप तो प्रचार करने जाते ही थे, इसके अतिरिक्त भी आप संलग्न क्षेत्रों में प्रचार के लिए घूमते ही रहते थे तथा युवकों को उत्साहित करते ही रहते थे। इस सम्बन्ध में जब मेरे श्वसुर लाला कर्मचन्द आर्य जी ने महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र के नगर भण्डारा में आर्यसमाज की स्थापना की तो आपका इस समाज में आना जाना आरम्भ हो गया तथा कर्मचन्द जी से पारिवारिक मित्रता का सम्बन्ध जुड़ गया। आपही के प्रयत्न का परिणाम था कि मेरा सम्बन्ध इस परिवार से जुड़ गया। यह आप ही थे जिन्होंने मेरा विवाह संस्कार करवाया। इस अवसर पर पण्डित प्रकाशचन्द कविरत्न जी का रचा गया वैवाहिक सेहरा उन्हीं के शिष्य पं. पन्नालाल पीयूष आर्योपदेशक जी ने पढ़ा था। १२ जनवरी १९७५ से १४ जनवरी १९७५ तक नागपुर में प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन हुआ। आप इस सम्मेलन में प्रतिनिधि स्वरुप सम्मिलित होने वाले थे। आपकी प्रेरणा व प्रयत्न के परिणाम स्वरुप मुझे भी पंजाब के प्रतिनिधि स्वरुप इस सम्मेलन में सम्मिलित होने का अवसर व सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं जब भी भण्डारा जाता आप मुझे मिलने के लिए अवश्य ही भण्डारा आया करते थे।

आप शुद्ध हिन्दी लेखन प्रयोग के पक्ष में थे। उन्होंने मुझे बताया कि आज हम किस प्रकार से गलत ढंग से हिन्दी शब्दों का प्रयोग कर रहे हैं कि हमें पता ही नहीं चलता। उन्होंने बताया कि आज स्कूलों में महिला अध्यापक के लिए अध्यापिका शब्द प्रयोग करते हैं, किन्तु यह गलत है। जिस प्रकार वकील की पत्नी को हम वकीलनी कहने लगते हैं, जिसका भाव होता है वकील की पत्नी। इस प्रकार ही अध्यापिका का अर्थ हुआ अध्यापक की पत्नी। पटाने वालों के लिए केवल एक भी शब्द है और वह है अध्यापक, चाहे वह पुरुष हो या महिला। आपने आर्यसमाज का प्रवचनों व लेखनी द्वारा खूब प्रचार किया तथा अनेक पुस्तकें भी लिखी। आपकी पुस्तकों में वैदिक संध्या, रामायण प्रदीप मीमांसा, जल्पवाद खण्डन, आर्यों का आदि देश, सत्य की खोज, ईसाई मत की छानबीन, वैदिक कालीन भारत, अनुपम मणिमाला आदि थी।

वैदिक कालीन भारत पुस्तक में उन्होंने भारतीय संस्कृति का समग्र इतिहास दिया था, यह पुस्तक मुझे भी भेंट स्वरुप दी थी। आपका मध्यप्रदेश के होशंगाबाद में यदा कदा जाना होता था। एक बार जब आप होशंगाबाद गए हुए थे कि अकस्मात दिनांक ४ अक्टूबर १९८८ इस्वी को देहान्त हो गया।

पता : १०४, शिप्रा अपार्टमेंट कौशाम्बी-२०१०१०

www.thearyasamaj.org

स्वाभिमान

"गब्बर"

- देवेन्द्र कुमार मिश्रा

कालिया का क्या होना है। उसे तो गब्बर के हाथों मरना ही है। वो भी इसलिए कि खाली हाथ आ गये। पहले मजाक किया। बचने पर खुशी मनाई। हंसे और फिर तीनों मर गये। तीनों को मार दिया गया।

हमारा सरदार भी खामोश है। पता ही नहीं चलता कि वो हमारा सरदार है या किसी का कालिया। उसका गब्ब कोई और है। बिलकुल चुपचाप बेजान सा। चाहे अनशन को गैरकानूनी बताकर गैरकानूनी काम किये जाये। चाहे भ्रष्टाचार के विरुद्ध कोई भूखा बैठा हो कई दिनों से। हमारा सरदार कालिया है किसी गब्बर का। जिसके डर से न वह कुछ कह पाता है न कर पाता है। महंगाई बढ़ती है बढ़ती रहे। हमारा सरदार ऐसे खामोश और सदमे में है जैसे गब्बर बंदूक तानकर पूछ रहा हो तो क्या होगा कालिया ? और ये तो हम सभी जानते है कि हम जिसे गब्बर समझते हैं वह कालिया बनकर कह रहा है कि मैंडम मैंने आपका नमक खाया है। आपकी कृपा से इतना महान् पद पाया है। लेकिन पंच बनते ही उसमें परमेश्वर का वास हो जाता है। प्रेमचंद ने अपनी कहानी में ये बात कही है कि किसी जिम्मेदार पद पर पहुंचते ही व्यक्ति निजी रिश्तों एवं लाभ-हानि से ऊपर उठकर केवल न्याय और सच का मान रखता है। फिर कुर्सी यदि प्रधानमंत्री की हो तो क्या ये नैतिक जिम्मेदारी नहीं बनती राष्ट्र के प्रधानमंत्री की कि वह अपने चुप और सन्नाटे से निकलकर कुछ करें कुछ बोले। कुठ कठोर निर्णय ले ताकि देश की जनता को ये भरोसा रहे कि इस देश में प्रधानमंत्री भी है। या जो कुछ करना बोलना है वे उनके तीन तिलंगे कहते रहे और सरदार चुपचाप बैठा रहे। आखिर उन तीन आदमियों से तो सरदार बड़ा ही है। कटे हाथ वाला ठाकुर पैरों में कीले वाले जूते पहनकर बदला ले सकता है। भाड़े पर दो लोग रख सकता है तो फिर ये प्रधानमंत्री क्यों कुछ नहीं करते ? क्या हाथ के साथ इनके पैर भी नहीं है। मुंह में जुबान भी नहीं है तो फिर गद्‌दी का मोह छोड़कर एक तरफ बैठे। ये क्या कि आप राष्ट्र के सर्वोच्च पद पर भी हैं और कुछ कहने करे को भी तैयार नहीं है। क्या काम की ऐसी सत्ता कि आप जनता को दिलासा देने में भी सक्षम नहीं है। कह दो अपने गब्बर से कि ये लो अपना दान में दिया पद। मैं वित्तमंत्री ही ठीक था। चाहे तो वहां से भी हटा दो। लेकिन मेरा कर्त्तव्य जो कहता है मुझे करने दो। प्रधानमंत्री आप सदमे से खामोशी से बाहर निकलकर अपने प्रधानमंत्री होने का अहसास करिये और करवाइये। यदि आप किसी गब्बरसिंह के कालिया है तो बात खत्म हुई। पूरे पांच साल आप मरे-मरे से निकाल देंगे। और यदि आप किसी के कालिया नहीं गब्बर है, ठाकुर है तो कुछ करिये। महंगाई, भ्रष्टाचार को इतना ही कह दे कि सांप को हाथों से नहीं पैरों से कुचला जाता है।

पता : पाटनी कालोनी, भरतनगर, चन्दनगाँव, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)४८१०००१

धर्माधर्म

जो पक्षपात-रहित न्याय, सत्य का ग्रहण, असत्य का परित्याग, पाँचों परीक्षाओं के अनुकूल आचरण, ईश्वराज्ञा पालन, परोपकार करना, रुप-धर्म और जो इनसे विपरीत वह अधर्म कहाता है, क्योंकि जो सब के अविरुद्ध वह धर्म और जो परस्पर विरुद्धाचरण सो अधर्म क्योंकर न कहावेगा।

- महर्षि दयानन्द सरस्वती

www.thearyasamaj.org

स्वास्थ्य-चर्चा

उदर वायु - उदर रोग

- श्री दीनानाथ वर्मा

(१) भोजनोपरान्त नित्य २५ ग्राम गुड़ खाने से उदरवायु एवं अन्य उदर रोग ठीक होते हैं तथा शरीर में यौवन बना रहता है।

(२) नीबू के रस में भीगी हुई सौंफ को भोजनोपरांत सेवन करने से पेट का भारीपन (गैस) दूर होता है। खूब भूख लगती है तथा मल भी साफ आता है।

(३) देशी अजवायन २५० ग्राम और काला नमक ६० ग्राम मिलाकर किसी साफ-स्वच्छ शीशी में डालकर ऊपर से नीबू का रस डाल दें। तदुपरांत इस बोतल को छाया में रख दें। जब नीबू का रस सूख जाए, तब इसमें पुनः नीबू का रस डालें। इस प्रकार सात बार नीबू का रस डालकर दवा को सुरक्षित रख लें। इसको २ ग्राम की मात्रा में भोजनोपरांत खाने से अरुचि नष्ट होकर भूख लगती है।

(४) जब तक खेतों में अथवा बाजार में बथुआ मिलता रहे, नित्य इसकी सब्जी खाएं। बथुए का रस, उबला हुआ पानी पिएं। पेट के प्रत्येक प्रकार के रोग- यकृत, तिल्ली, अजीर्ण, गैस, कृमि, दर्द, अर्श (बवासीर) व पथरी आदि रोग ठीक हो जाते हैं।

(५) ताजे लम्बे बैगन की सब्जी जब तक मौसम में (बाजार में) बैगन उपलब्ध रहे, तब तक खाते रहें। इस प्रयोग से गैस की तिल्ली यदि बढ़ी हुई हो, तो उसमें भी आराम होता है।

(६) प्रतिदिन भोजनोपरांत १० ग्राम गुड़ मुख में डालकर धीरे-धीरे चूसने से मुंह में खट्टा पानी आनी बन्द हो जाता है। अम्ल पित्त के नाश के अतिरिक्त इस प्रयोग से पेट में वायु भी भी नहीं बनती है।

पेट में गैस बनने की दशा में इस प्रयोग से लाभ होता है, क्योंकि खाना खाने के बाद गुड़ चूसने से यह शरीर का कचड़ा बाहर निकालने में सहायक है। मुंह के छालों से भी इससे आराम होता है। यह प्रयोग हृदय की दुर्बलता औरं शरीर की शिथिलता में भी उपयोगी है। एक साल पुराना गुड़ अधिक लाभकारी सिद्ध होता है।

नोट :- गुड़ को १ घंटे तक धूप में रखने से (आयुर्वेदीय मतानुसार) उसमें पुराने गुड़ के गुण उत्पन्न हो जाते हैं।

(७) एक नीबू का रस एक गिलास गर्म पानी के साथ रात्रि में सोते समय सेवन करने से प्रातःकाल दस्त खुलकर आता है।

(८) एक भाग चावल में २ भाग मूंग की दाल मिलाकर बनाई गई खिचड़ी में घी मिलाकर खाने से कब्ज दूर होती है।

(९) गेहूँ के आटे को मैदे की छलनी से छान लें और जो चोकर (भूंसी) निकले, उसे तवे पर भून लें। उसे इतना भूने की वह लाल हो जाए, लेकिन ध्यान रहे कि यह कच्ची न रहे और जले भी नहीं। फिर इस भुनी हुई चोकर को दूध, शक्कर पानी में डालकर खूब उबालें। तदुपरांत छानकर पिएं। इसका स्वाद काफी (कहवा) के समान होगा, जिससे तुरंत स्फूर्ति प्राप्त होगी, क्योंकि इसमें, प्रोटीन अधिक है। इस प्रयोग से कब्ज, गैस रोग, ब्लड-प्रेशर व हार्ट अटैक में लाभ मिलता है। यह शारीरिक कमजोरी दूर करने का लाजवाब टॉनिक है।

(१०) गर्म दूध के साथ इसबगोल की भूसी या गुलाब का गुलकंद लेने से शौच खुलकर आता है। बवासीर के लिए भी लाभकारी है।

पता : मकान नं. डी-119/1, टैगोर नगर, रायपुर - 492001 (छ.ग.)

आरोग्य होमियोपैथी से सर्दी नजला (साइनस) का उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)
त्रिवेदी होमियो औषधालय, टाटीबन्ध रायपुर (छ.ग.)
मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

भागदौड़ व तनावपूर्ण जिंदगी में लोगों का बीमारियों से बचना आसान नहीं है। बदलती जीवन शैली के चलते आये दिन कोई न कोई बीमारी हमें घेरे रहती है, प्रदूषण, मानसिक तनाव, वातावरण के बदलाव, खान-पान की गलत आदतें, जिससे नए जीवाणु विकसित होते हैं, सर्दी जुकान समझकर उसे गंभीरता से नहीं लेते, जो आगे चलकर यह समस्या बढ़ जाती है।

होमियोपैथी में इन रोगों की अचूक औषधियाँ हैं, जो लक्षणों के आधार पर देने से रोगों को नियंत्रण करने में सफलता मिलती है। सामान्य जुकाम को नैसोफेरिन्जाइटिस, राइनोफेरिन्जाइटिस अत्यधिक नजला या जुकाम के नाम से जाना जाता है। यह ऊपरी श्वसन तंत्र का आसानी से फैलाने वाला संक्रामक रोग है, जो अधिकांश नासिका को प्रभावित करता है, ऐसे दो सौ से अधिक वायरस होते हैं जो सामान्य जुकाम का कारण बन सकते हैं।

नाक साइनस गले व कंठनली (ऊपरी श्वसन तंत्र का संक्रमण) मुख्य रुप से नासिक मनुयों में सबसे अधिक होने वाला यह संक्रामक रोग है।

लक्षण :-

सबसे आम लक्षणों में खांसी, नाक का बहना, नासिका मार्ग में अवरोध और गले में खराश होती है, मांसपेशियों का दर्द, थकान का अनुभव, सिर में दर्द भूख कम लगना, नवजात शिशुओं और बच्चों में यह एक आम समस्या बन गई है। बलगम का रंग हरा या पीला होता है। बहुत जल्द छिक आना अधिक ठण्ड महसूस करना, बुखार आना आदि इसके लक्षण हो सकते हैं।

होमियोपैथिक उपचार :-

होमियोपैथी पद्धति से उपचार कराकर कई रोगी स्वस्थ हो गए हैं एवं कई रोगियों का उपचार चल रहा है। सम्पूर्ण लक्षणों को मिलान कर चुनी हुई औषधि देने से अत्यधिक सफलता पाई गई है।

प्रमुख औषधि :- जेल्सिमियम, एकोनाईट, फेरमफास, मार्कसाल, यूपिटोरियम, ब्रायोनिया, सल्फर, नक्स, एलियमसीपा, बेलादोना आदि।

कविता

नया जंग फिर शुरु करो

हर हाथ रंगा है रिश्वत से, हर शख्स ठगी से जुड़ा हुआ,
पिंजर से पिंजर निक़ल रहे, हर जगह गबन है दफन हुआ।
पेट्रोल के नाम पे खुली लूट, सरकार स्वयं जब चला रही,
उस लूट को रोके कौन भला, शासन ही जिससे जुड़ा हुआ।
रुपयों की कीमत कौड़ी हुई, जनता की बचत सब हवा हुई,
खैरात लुटा कर कर्जों की, बैंकों का बण्टाधार किया।
आतंक उत्पात नहीं रुकते, हर सांस जुल्म से जरी हुई,
निर्दोष की मौतों पर इनकी, कुर्सी का पाया टिका हुआ।
शिक्षा-स्वास्थ्य व्यापार बना, केपीटेशन के नाम लूट मचा,
क़ानून-न्याय की परवाह किसे, शासन ही डाकू बना हुआ।
जनतंत्र नहीं ये जातितंत्र, परिवार-वाद का है षड़यंत्र,
देश की लूटिया डुबो कर भी, अपनो को मालामाल किया।
धर्म-जुनून का तुष्टीकरण, हल नहीं है देश-समस्या का,
मत बख्शो देश-भंजकों को, सखती से कुचलो खत्म करो।
क्या यही है देश की आजादी ? दी इसके लिए थी कुर्बानी ?
इक नया जंग फिर शुरु करो, मक्कारों से मुल्क को मुक्त करो।

- मधु काबरा

www.thearyasamaj.org

समाचार प्रवाह

सफल रहा—युवा प्रशिक्षण शिविर

(आर्यसमाज कांसा ने कराए विविध कार्यक्रम)

कांसा (जांजगीर चांपा) । आर्यसमाज कांसा के तत्वावधान में छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसमाज बघौद व आर्यसमाज कोटमी के संयुक्त प्रयास से १३ से २० वर्ष तक के बालकों के लिए दिनांक २६ अक्टूबर से १ नवम्बर तक ज्ञान गंगा उ.मा.विद्यालय कांसा (डभरा) जांजगीर चांपा के प्रांगण में आर्यवीर दल शिविर का आयोजन किया गया । यह शिविर ७ दिन के लिए पूर्णतः आवासीय रुप से रखा गया था । शिविर में १३ गांव से ८५ बच्चों ने भाग लिया था । बच्चों के शारीरिक प्रशिक्षण के लिए कांसा (डभरा: से आचार्य सुरेश जी, सारंगढ़ से कीर्तिपाल जी, दुर्ग से भुवनेश्वर आर्य एवं दमउदरहा से प्रमोद जी आदि व्यायाम शिक्षकों ने आचार्य शैल कुमार आर्य (प्रांतीय व्यायाम शिक्षक) के निर्देशन में विविध व्यायाम सिखाने का कार्य किया । इन्होने बच्चों को बड़ी कुशलता के साथ कठोर परिश्रम करके केवल पांच दिनों में आसन, कराटे, लाठी चलाना, दण्ड-बैठक, संर्वांगसुन्दर व्यायाम, भूमि नमस्कार, सूर्य नमस्कार आदि का प्रशिक्षण दिया । इसके साथ-साथ शिक्षाप्रद मनोरंजक खेल खेलना भी सिखाया । आंख व कंठ से लोहे की सरिया को मोड़ना, आग में कूदना, ईंटों को हाथ सो तोड़ना, ट्यूबलाईट को शरीर से फोड़ना एवं इंडिया गेट आदि विविध पिरामिड की रचना करना जैसे कठिन व अद्‌भुत कला भी सिखाए ।

शरीर निर्माण व रक्षा के साथ-साथ बच्चों को बौद्धिक व नैतिक प्रशिक्षण भी दिया गया । इसके लिए हरियाणा से पधारे आचार्य सत्यव्रत जी (आचार्य आर्ष गुरुकुल सुन्दरपुर) ने ईश्वर ईश्वर उपासना, तैंतीस देवता, यज्ञ, संध्या, ब्रह्मचर्य आदि जीवन उपयोगी महत्वपूर्ण विषयों को सरलता से समझाया । इन्हीं के शिष्य आचार्य अंशुदेव जी आर्य (प्रधान, छ.ग. प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा) ने बच्चों को अपने जीवन की घटनाओं को बताकर खूब प्रेरित व उत्साहित किया । आचार्य जी ने बताया कि ऐसे ही शिविर में भाग लेकर मैने अपने जीवन का सुधार किया । शिविर से ही प्रेरित होकर गांव में बच्चों का संगठन के साथ व्यायाम किया करते थे एवं बड़े लोगों को दिखाया करते थे । प्यारे बच्चों ! तुम्हें भी यह अमूय अवसर मिला है । यहां से खूब सीखकर जाना है तथा अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाना है । कोरबा से आये श्री नोधेन्द्र बरेठ जी ने बच्चों को व्यक्तिव विकास की शिक्षा दी । आचार्य रणवीर जी ने प्रतिदिन ध्यान व यज्ञ कराना सिखाया ।

आर्यसमाज कोटमी में प्रदर्शन

३१ अक्टूबर को शाम ३.०० बजे ग्राम कोटमी में बच्चों ने रैली निकाली एवं ४ बजे व्यायाम का प्रदर्शन किया। पांच दिन के अल्पसमय में सीखे बच्चों के अनुशासित व जोश भरे प्रदर्शन को कोटमी ग्रामवासियों ने बड़ी तन्मयता से देखा तथा तालियों की गड़गड़ाहट से और रुपयों से पुरस्कृत करके बच्चों का ख़ूब उत्साहवर्धन किया । लाठी की गति को देखकर तो कुछ लोग दूर से ही डर रहे थे । गांव के युवा सरपंच श्री अनिल पटेल जी ने ११०० रु. का पारितोषिक देकर अपने गांव में भी ऐसी ही शिविर के आयोजन करने हेतु पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया ।

आचार्य सत्यवव्रत जी एवं आचार्य अंशुदेव जी का ग्रामवासियों ने पुष्पाहार से स्वागत किया तथा उनका प्रवचन सुना । आचार्य अंशुदेव जी ने कहा कि इस गांव से मेरा पुराना संबंध है । यहां के श्री कौशल प्रसाद पटेल जी से मैने सद्ज्ञान सीखा है । श्री जयनारायण पटेल जी ने पूरे कार्यक्रम का गांव के प्रतिनिधि के रुप में कार्यक्रम की सार्थकता और लाभ को अपने अनुभव से सुनाया । श्री घनश्याम पटेल, श्री उमाशंकर पटेल, श्री राघव कर्ष, श्री कृष्ण कुमार चौधरी जी आदि श्रद्धालुओं ने इस कार्यक्रम के आयोजन हेतु खूब प्रयास किया व धन से सहयोग दिया ।

कांसा में प्रदर्शन

१ नवम्बर को शाम ४ बजे ग्राम कांसा में ही बच्चों का प्रदर्शन का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ । इसे देखने के लिए कांसा के अतिरिक्त कटौद, कोटमी, बघौद आदि अनेक गांव से सैकड़ों लोग आये थे । क्षेत्रीय विधायक श्री युद्धवीर सिंह जूदेव जी भी उपस्थित थे । विधायक जी ने आचार्य

www.thearyasamaj.org

सत्यव्रत जी एवं आचार्य अंशुदेव जी का पुष्पाहार से स्वागत किया और आशीर्वाद ग्रहण किया। स्वागत की कड़ी के बाद बच्चों ने अपना शेष प्रदर्शन शुरु किया। अपने प्रदर्शन से बच्चों ने लोगों का दिल खुश कर दिया तथा आश्चर्य में डाल दिया कि थोड़े ही समय में और वर्षा की बाधा के बावजूद इतना सब कैसे सीख लिया। बच्चों ने यह सिद्ध करके दिखा दिया कि हम कमजोर व बिगड़े हुए नहीं है, यदि ऐसे आचार्य सिखाने वाले हों तो हम सब कुछ सीखकर कुछ बनकर दिखा सकते हैं। शिविर में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किये बच्चों को आचार्य सत्यव्रत जी एवं आचार्य अंशुदेव जी ने सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक व शील्ड कप आदि से पुरस्कृत किया। पारितोषिक वितरण के बाद ध्वज उतारकर सात दिवसीय शिविर का समापन हुआ।

कर्णवेध संस्कार

२ नवम्बर को श्री महावीर चन्द्र एवं श्रीमती मीना चन्द्रा ने अपने दोनों बच्चों कु. सुमेधा (१० वर्ष) व अमर्त्य (४ वर्ष) का कर्णवेध संस्कार आचार्य सत्यव्रत जी से करवाया। इस संस्कार में गांव के बच्चे कुटुम्बीयजन, आर्यजन एवं आचार्यों ने बच्चों को आशीर्वाद दिया। श्री बेनी प्रसाद साहू ने कर्णछेदन किया।

आर्यसमाज बघौद का शिलान्यास

आचार्य सत्यव्रत जी के कर कमलों से २ नवम्बर २०१३ को सायंकालीन बेला में आर्यसमाज के भवन का शिलान्यास किया गया। समारोह में आचार्य जगबन्धु जी, आचार्य दिलीप जी, आचार्य आलोक जी एवं कांसा से श्री चरणसिंह साहू, श्री सुखदेव प्रसाद वर्मा, श्री रोहिणी कुमार चन्द्रा, श्री भगवान प्रसाद चन्द्रा आदि उपस्थित थे। श्री सुन्दरलाल साहू जी ने आर्यसमाज के लिए सभा को भूमि दान की। श्री राम कुमार जी साहू, श्री त्रिलोचन साहू, श्री लालबहादुर साहू, श्री कान्हाकृष्म वैष्णव, सरपंच श्री श्यामा कृष्ण वैष्णव, श्री राजीवलोचन साहू आदि आर्यजनों ने कार्यक्रम की व्यवस्था की।

शिलान्यास समारोह

पिछले सात-आठ वर्षों से ग्राम कांसा में वैदिक विद्वानों के सान्निध्य में वैदिक प्रवचन, आर्यवीर दल शिविर, योग शिविर आदि कार्यक्रमों का आयोजन होता रहा है। पर आर्यसमाज का कोई भवन नहीं बन पाया। आज बड़े हर्ष और सौभाग्य की बात है कि महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बलिदान दिवस कार्तिक अमावस्या २०७० तद्नुसार दिनांक ३ नवम्बर २०१३ को प्रातः ९.३० बजे गणमान्य व्यक्तियों आर्यवीरों व २० यजमान परिवारों के साथ एक विशाल यज्ञवेदी में पहले नवसस्येष्टि यज्ञ (दीपावली पर्व) मनाया गया। यज्ञ के बाद श्रद्धेय आचार्य सत्यव्रत जी एवं सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य ने आर्यसमाज के भवन का शिलान्यास किया तथा वस्त्र से ढके शिलालेख का अनावरण किया। लोगों ने जोश भरे कण्ठ से स्वामी दयानन्द का जयघोष करके अपनी प्रसन्नता व्यक्त की।

आचार्य जनों के बाद श्री चरणसिंह साहू, श्री सुखदेव प्रसाद वर्मा, श्री मोहन प्रसाद चन्द्रा, श्री पिताम्बर चन्द्रा, श्री श्यामजीलाल साहू, श्री चन्द्रभान सिंह चन्द्रा, श्री अमलीपलिहा बरेठ, श्रीमती सीताबाई चन्द्रा आदि ने आर्यसमाज की नींव में ईंटें रखी। श्री रोहिणी कुमार चन्द्रा ने आर्यसमाज के भवन हेतु २७ डि.मी. भूमि सभा को भेंट की। भवन निर्माण हेतु आचार्य अंशुदेव जी आर्य ने डेढ़ लाख रुपये देने की घोषणा की। बलराम चन्द्रा (कांसा) ने ५००० रुपये नगद, श्रीमती गनेशीबाई चन्द्रा (कटौद) २५००० रुपये, श्री कल्याण कैवर्त्य की पत्नी ने १००० रुपये देने की घोषणा की। यह सारा कार्यक्रम आचार्य रणवीर जी के निर्देशन व संयोजन में सम्पन्न हुआ।

इस कार्यक्रम को करने में जिनके भुजाओं का निरंतर सहयोग मिला, जिसमें सर्वश्री सुरेन्द्र चन्द्रा, सुखीराम साहू, मदन कैवर्त्य, सोनसाय बरेठ, नारायण सिदार, दूबराज कैवर्त्य, नानदाऊ बरेठ, वेदप्रकाश साहू एवं श्रीकांत वर्मा। जिनका समय-समय पर सहयोग प्राप्त होता रहा - जिसमें सर्वश्री रोहित कुमार चन्द्रा, भगवान प्रशाद चन्द्रा, हरिप्रसाद चन्द्रा, शिवदयाल चन्द्रा, बालचन्द साहू, फूलचन्द चन्द्रा, ओमप्रकाश चन्द्रा, नरेन्द्र वर्मा, कन्हैया चन्द्रा आदि।

शिलान्यास कार्यक्रम में आये सभी आर्यजनों एवं सभा से आये आचार्य दिलीप जी, आचार्य जगबन्धु जी, आचार्य आलोक जी का हार्दिक धन्यवाद। आचार्य अंशुदेव जी आर्य, आचार्य सत्यव्रत जी का कोटिशः धन्यवाद! एवं सबके प्रेरक परमात्मा का हार्दिक नमन।

संवाददाता : आचार्य रणवीर शास्त्री

www.thearyasamaj.org

आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन के मीडिया एलबम का विमोचन

कोटा (राजस्थान) । आर्य युवक युवती परिचय सम्मेलन की एक लंबे समय से चिर परिचित आवश्यकता अनुभव की जा रही थी । जिसे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने हाथ में लेकर एक प्रशंसनीय तथा अनुकरणीय कार्य किया है । उक्त विचार आर्य समाज के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान डॉ. वागीश आचार्य ने आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन की मीडिया एलबम का विमोचन करते हुए व्यक्त किये ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय में आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा (कोटा) द्वारा तैयार की गई एलबम के विमोचन के अवसर पर डॉ. वागीश आचार्य ने कहा कि आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन के इस कार्य का और अधिक विस्तार कर प्रान्तीय स्तर पर आयोजन किया जाना चाहिए । इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य, आचार्य धनञ्जय शास्त्री जातवेदाः दुर्ग, कोटा के जिला संयोजक रामप्रसाद याज्ञिक, दिल्ली की महिला संयोजिका श्रीमती विभा आर्या, श्रीमती बीना आर्या, धर्मेश आर्य विचार टीवी आदि उपस्थित थे ।

संवाददाता : अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक

सिंधी समाज के गिरधारी पंजवानी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट

कोटा । संत कंवरराम सिंधी धर्मशाला पंचायत समिति की ओर से संत कंवरराम साहेब के ७४वें वर्सी महोत्सव के अवसर पर आर्य समाज जिला सभा की ओर से समिति के अध्यक्ष गिरधारी लाल पंजवानी को कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डीएससीएल के वरिष्ठ कार्यकारी निदेशक के.के. कौल व आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने महर्षि दयानन्द रचित अमरग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया ।

सिंधी पंचायत समिति द्वारा आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा, विज्ञाननगर आर्यसमाज के प्रधान श्री जे.एस. दुबे महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति के संस्थापक प्रधान रामप्रसाद याज्ञिक को शॉल ओढ़ाकर स्मृति चिन्ह भेंट किया ।

संवाददाता : रामप्रसाद याज्ञिक

अपनी आत्मा को करे ज्ञान से प्रकाश

आर्यसमाज ने मनाया महर्षि निर्वाण दिवस

कोटा । हमें अपनी आत्मा को ज्ञान से प्रकाशित करना चाहिए । वैदिक ज्ञान आत्मा के अज्ञान तथा अंधविश्वास को दूर करता है । यह बात आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने रविवार ०३ नवम्बर २०१३ को आर्य समाज गायत्री विहार में कोटा की सभी आर्यसमाजों द्वारा संयुक्त रुप से मनाये गये महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस और शारदीय नवसंस्येष्ठि (दीपावली) पर्व के अवसर पर आयोजित समारोह में कही । कार्यक्रम में सुशीला कुर्मी, श्रीमती उषा भटनागर और बालिका विभूति वासुदेव द्वारा सुमधुर भजन प्रस्तुत किये गये ।

इस अवसर पर बड़ी संख्या में कोटा के सभी आर्यसमाजों के अधिकारीगण तथा सदस्य और गणमान्य जन उपस्थित थे । कार्यक्रम का संचालन और अंत में धन्यवाद ज्ञापन आर्यसमाज गायत्री विहार के मंत्री उमेश कुर्मी द्वारा किया गया ।

संवाददाता : रामप्रसाद याज्ञिक

www.thearyasamaj.org

आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने अपनी तीन पीढ़ियों के सदस्यों के साथ किया नेत्रदान का संकल्प

कोटा। कोटा में नेत्रदान के प्रति जागरुकता लगातार बढ़ती जा रही है। लोग व्यक्तिगत या समूह में आकर नेत्रदान करने का संकल्प कर रहे हैं यही कारण है कि नेत्रदान का प्रतिशत पिछले वर्ष की तुलना में कई गुना बढ़ गया है। इसी क्रम में एक परिवार ऐसा भी है, जहां मरणोपरान्त नेत्रदान करना एक परम्परा बन चुकी है। जिला प्रधान आर्य समाज कोटा के अर्जुनदेव चड्ढा का परिवार इसका उदाहरण हैं जिनके घर में पहल नेत्रदान वर्ष १९८७ में उनके पिताजी श्री रामलाल चड्ढा जी से हुई जिस समय नेत्रदान के बारे में जानकारी का अभाव था। इसके बाद उनकी पत्नी श्रीमती संतोष चड्ढा जी का देहान्त वर्ष १९९७ में हुई उनका भी नेत्रदान किया गया। इसी तरह वर्ष २०१० में इनके बड़े भाई श्री बलदेव राज चड्ढा का भी नेत्रदान किया गया। आज सम्पूर्ण परिवार के १८ सदस्यों ने एक साथ इस नेक कार्य नेत्रदान महादान का संकल्प लिया, जिसमें तीन पीढ़ियाँ शामिल रही। *संवाददाता - डॉ. कुलवंत गौड़*

वेद प्रचार अभियान सम्पन्न

भिलाई। आर्यसमाज सेक्टर-६, भिलाई (छ.ग.) का २८ दिवसीय वेद प्रचार अभियान २०१३ का आयोजन दो चरणों में सम्पन्न हुआ। प्रथम चरण श्रावणी पर्व से प्रारंभ होकर जन्माष्टमी तक तथा द्वितीय चरण १ अक्टूबर से २० अक्टूबर तक किया गया। इस आयोजन में भिलाई दुर्ग शहर के विभिन्न इलाकों पारिवारिक यज्ञ एवं सत्संग का कार्यक्रम हुआ। श्रद्धालुओं की उपस्थिति प्रशंसनीय थी।

इस दौरान ख्याति प्राप्त उपदेशक **आचार्य महावीर मुमुक्षु जी** मुरादाबाद से एवं **पं. अमरसिंह** भजनोपदेशक वियावर राजस्थान से एवं बिजनौर उत्तर प्रदेश से **पं. भीष्म जी** एवं **पं. टीकमसिंह मधुर** पधारे। इन्होने अपने प्रवचनों एवं भजनों के माध्यम से वेदवाणी का प्रचार-प्रसार किया। इस दौरान भिलाई इस्पात संयंत्र द्वारा संचालित सियान सदन में वृद्धजनों के लिए भी एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रधान श्री अवनीभूषण पुरंग तथा मंत्री श्री रवि आर्य का निरंतर सहयोग रहा। ***संवाददाता - रवि आर्य, मंत्री, आर्यसमाज सेक्टर-६***

आर्य समाज कटनी के द्विवार्षिक चुनाव सम्पन्न

कटनी। आर्यसमाज कटनी के द्विवार्षिक चुनाव के लिए स्थानीय आर्यसमाज मंदिर सिविल लाईन में चुनाव अधिकारी श्री रामप्रसाद मिश्र एवं हरिश्चंद सूरी के निर्देशन व योगेश मिश्रा के संचालन में सम्पन्न हुए। सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में उपस्थित सदस्यों ने सर्वसम्मति से प्रधान पद के लिये श्री अश्विनी सहगल व मंत्री श्री योगेश मिश्रा को चुना। अन्य पदों में उपप्रधान-श्री नागेश्वर प्रसाद एवं गोपीचंद बजीरानी, उपमंत्री डॉ. कालीचरण कछवाह, शरद राजभर, विश्वराज पाण्डेय, कोषाध्यक्ष संदीप मनोचा, चयनलाल येडे एवं नरेन्द्र विश्वकर्मा, कमलेश प्यासी, वैदिक प्रवक्ता, ग्रंथपाल दुर्गाप्रसाद विश्वकर्मा एवं धर्मराज यादव प्रचार मंत्री, प्रेमसिंह, पुरुषोत्तम साहू, मंदिर प्रबंधक विश्वराज पाण्डेय को चुना गया।

संवाददाता : अश्विनी सहगल

www.thearyasamaj.org

वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी "वेद वेदांग गौरव सम्मान" से सम्मानित

दिल्ली । विलक्षण प्रतिभा के धनी, उच्चकोटि के वैदिक चिंतक, अन्तर्राष्ट्रीय कथाकार आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को आर्यसमाज महावीर नगर नई दिल्ली के तत्वावधान में आयोजित भव्य सत्संग समारोह में वेद वेदांग गौरव सम्मान से विभूषित किया गया ।समारोह के अध्यक्ष श्री ओ.पी. बब्बर जी (विधायक), मुख्य अतिथि श्री यशपाल आर्य जी (चेयरमेन एवं निगम पार्षद), श्री राजीव बब्बर जी (प्रवक्ता भाजपा, दिल्ली प्रदेश) समाज प्रधान श्री राजपाल पुल्यानी जी एवं कोषाध्यक्ष श्री दिनेश आर्य जी ने आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को शाल, पुष्पमाला, प्रशस्ति-पत्र एवं सम्मान राशि देकर सम्मानित किया । यह सम्मान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी की वैदिक धर्म प्रचार की सफल कनाडा यात्रा की सम्पन्नता के पावन पर्व पर उन्हें प्रदान किया गया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री सत्यनारायण डंग, श्री ललित चौधरी, श्री बलदेवराज आर्य आदि महानुभावों ने समारोह को सम्बोधित किया । समाज के संरक्षक सर्वश्री जगवीर हुड्डा, के.एल. मदान, सुदर्शन नाद्रा, अतुल नाद्रा, सत्यदेव आर्य, योगेश सब्बरवाल, सुभाष खन्ना, प्रधान श्री राजपाल पुल्यानी, मंत्री श्री मायाराम शास्त्री आदि सभी पदाधिकारियों सदस्यों एवं महिला आर्यसमाज के पदाधिकारियों के पुरुषार्थ से यह कार्यक्रम सफल रहा । कार्यक्रम का कुशल संयोजन एवं संचालन श्री दिनेश आर्य, श्री ओमप्रकाश विद्यालंकार एवं श्री नरेन्द्र आर्य ने किया ।

संवाददाता : श्री दिनेश आर्य, दिल्ली

आर्यसमाज टाण्डा का १२२वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

टाण्डा (उत्तरप्रदेश) । आर्यसमाज का १२२वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक १३ से १७ नवम्बर २०१३ को हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ । बाबू आनन्द कुमार आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल एवं श्री रवि चन्द्र आर्य मंत्री के साथ श्री अनूप कुमार मौर्य कोषाध्यक्ष का श्लाघनीय पुरुषार्थ से प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी कार्तिक सुदी एकादशी से कार्तिक पूर्णिमा तक समारोह स्थल मिश्रीलाल आर्य कन्या इंटरकालेज एवं डी.ए.व्ही. एकेडमी टाण्डा में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

दिनांक १३ नवम्बर को दोप. २ बजे से ५ बजे तक विशाल शोभायात्रा सम्पन्न हुई, जिसके संयोजक श्री ओमप्रकाश आर्य, श्री चन्द्रगुप्त मौर्य, श्री सौरभ आर्य रहे। प्रेरक उद्‌बोधन डॉ. सोमदेव शास्त्री, भजन डॉ. कैलाश जी कर्मठ कोलकाता, आचार्या प्रियम्वदा वेदभारती नजीबाबाद का सारगर्भित उद्‌बोधन हुआ । कार्यक्रम में श्री मिठाईलाल सिंह प्रधान प्रतिनिधि सभा मुम्बई, श्री अरुण अब्रोल मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई, श्री देवेन्द्रपाल वर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र., श्री दीनदयाल गुप्त मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल, श्री दीनानाथ वर्मा मंत्री छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री दिलीप आर्य कार्यालय मंत्री छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा आदि उपस्थित रहे ।

संवाददाता : दिलीप आर्य, दुर्ग

गुरुकुल होशंगाबाद का १०२वाँ वार्षिकोत्सव

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (म.प्र.) का १०२वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक १३, १४, १५ दिसम्बर २०१३ को आयोजित किया जा रहा है । इस उत्सव में देश के ख्यातनाम विद्वानों द्वारा विविध विषयों पर उपदेश व प्रवचन होंगे तथा अध्ययनरत् ब्रह्मचारी छात्रों के पाणि तथा वाणी के मनोहर कार्यक्रम देखने को मिलेगें। आप समस्त गुरुकुल प्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि उक्त कार्यक्रम में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ायें व विद्वानों के प्रवचनों से लाभ लें ।

निवेदक : आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक,
संयोजक गुरुकुल महोत्सव

www.thearyasamaj.org

आर्यसमाज कांसा द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ

www.thearyasamaj.org

CHH-HIN/2006/17407

(छपी सामग्री प्रिन्टेड बुक)

सेवा में,

श्रीमान्

प्रेषक :
अग्निदूत, हिन्दी मासिक पत्रिका
कार्यालय, छ.ग.प्रान्तीय आर्य
प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर,
आर्यनगर, दुर्ग -491001 (छ.ग.)

संस्कृत परिवार का सम्मान

दिल्ली में महर्षि दयानन्द निर्वाणोत्सव के अवसर पर सुसंस्कृत संस्कारिक परिवार आचार्य धनञ्जय शास्त्री जातवेदाः का सम्मान महाशय धर्मपाल जी हट्टी (एम.डी.एच) द्वारा किया गया.

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा पायोनियर प्रिन्टर्स, ओमपरिसर, आर्यनगर, दुर्ग से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया.